वर्ष 47/अंक15/जून-जुलाई/2023/मासिक

दिल्ली शिक्षा

नए युग में

छुट्टियों का गृह कार्य
अब सजा़ नहीं मजा़

किताबों से आगे
की यात्रा

कला समेकित शिक्षा के मायने

#DelhiGovtSchools Our stories on Social Media

"YOGA has the power to reconstruct a person completely".Our students as NCC Cadets participating in #InternationalDayofYoga2023 event!

Dr. Rita Sharma, Addl. DE DoE /Director @SCERT2021 is sharing space as a guest speaker along with many eminent personalities at G20-S20 Meet's Conclave on Skill India at @iit__mandi

.

Our Principals are on the learning and sharing spree!
Catch a few glimpses of the 'Cluster Leadership Development Program' at the picturesque Himalayan lake town- Nainital.

दिल्ली शिक्षा
नए युग में

विशेष आभार

अशोक कुमार, आईएएस
सचिव, शिक्षा विभाग

हिमांशु गुप्ता, आईएएस
निदेशक, शिक्षा निदेशालय

शैलेन्द्र शर्मा, शिक्षा सलाहकार

संपादक

डॉ बी पी पांडे, OSD, स्कूल ब्रांच

लेआउट डिजाइन

नवीन कुमार श्रीवास्तव
कलाध्यापक

समन्वय

कादंबरी लोहिया
प्रवक्ता, अंग्रेज़ी

संपादकीय मंडल

अक्षय कुमार दीक्षित
टी जी टी, हिंदी

भावना सावनानी
प्रवक्ता, जीव विज्ञान

डॉ नील कमल मिश्र
टी जी टी, प्राकृतिक विज्ञान

रविंद्र कुमार
टी जी टी, प्राकृतिक विज्ञान

रोहित उपाध्याय
टी जी टी, गणित

सुमन रेलन
प्रवक्ता, अंग्रेज़ी

विशेष सहयोग

अंकित सोलंकी
मो अहसान

अंदर के पन्नों पर

01 छुट्टियों का गृह कार्य अब सजा़ नहीं मजा़ (शिवानी सपरा)

04 पर्यावरण स्थायित्व के लिए एक पहल (डॉ. प्रीति शर्मा)

06 एक विद्यालय ऐसा भी (डॉ लक्ष्मण सिंह)

11 तकनीक के नियंता बने ना कि गुलाम (बीना नयाल)

15 टीएलएम: बच्चों को सिखाने का अनूठा प्रयास (अंकिता शर्मा)

19 किताबों से आगे की यात्रा (मोनिका जगोता)

23 रीड वीद स्टूडेंट्स की पाँचवी श्रृंखला:एक यादगार एहसास (मालती नारंग)

27 कला समेकित शिक्षा के मायने (पंकज तिवारी)

30 EMC की सफलता (सुनील कुमार महतो)

32 विद्यालय मे संगीत शिक्षा क्यों (डॉ प्रियलक्ष्मी)

36 कड़ी से जुड़ती कड़ी (वीणा शर्मा)

39 के-यान : शिक्षण, अधिगम और मनोरंजन (अमित कुमार शर्मा)

41 प्रोजेक्ट वॉयस: दिल्ली के बच्चों की आवाज़ (नेतल राजे पुष्करणा)

44 छात्रों की सहभागिता से आसान हुई परीक्षा की तैयारी (लोकेश शर्मा)

शिवानी सपरा
टी. जी. टी. (सोशल साइंस), सर्वोदय कन्या विद्यालय, नंबर 02, मादीपुर

छुट्टियों का गृह कार्य अब सजा़ नहीं मजा़

मुझे लगता है एक अध्यापक या अध्यापिका को हमेशा एक विद्यार्थी की जगह खुद को रख कर सोचना चाहिए। इसे हम सहज अनुभूति का नाम भी दे सकते हैं। इसी बात को ध्यान में रखते हुए मैंने छुट्टियों के गृह कार्य को अपनी प्यारी कक्षा छठी की छात्राओं को कुछ अलग परंतु उपयोगी रूप देना ठान लिया था। इसी के चलते गृह कार्य को गृह कार्य ना मानकर इस के द्वारा कुछ विशेष उद्देश्यों की प्राप्ति को ध्यान में रखते हुए इसे मैंने "सीखने के विस्तार" का दर्जा दिया। मैं सामाजिक विज्ञान की अध्यापिका हूँ तथा सामाजिक विज्ञान विषय के संबंध में यह कथन अक्सर सुनने को मिलता है कि "जो भी सूर्य के अंतर्गत है, वह सब सामाजिक विज्ञान का अभिन्न अंग है"।

इसी कथन को सार्थक करते हुए तथा बच्चों के लिए समय के सदुपयोग व लाभ को जोड़ते हुए मैंने उन्हें अधिगम या सीखने के विस्तार के रूप में एक गतिविधि करके लाने को दी।

इस गतिविधि के अंतर्गत सभी छात्राओं को अपने माता पिता के साथ सर्दियों की छुट्टियों में "राष्ट्रीय शिल्प संग्रहालय एवं हस्तकला अकादमी" जाने को कहा।

मैं खुद भी यहाँ पर 27 नवंबर 2022 को गई थी तथा मुझे अपनी छात्राओं के लिए यह जगह अत्यंत लाभप्रद और नवीन ज्ञान की नींव रखने में सहायक लगी।

एक पंथ दो काज को सार्थक करते हुए मैंने इसे छात्राओं के साथ साझा किया जिसे सुनते ही वह सब भी बहुत खुश हो गईं। हम भी अपने बचपन में घूमने फिरने के नाम से ही झूम उठते थे। इसका एक और उद्देश्य शैक्षणिक भ्रमण के रूप में भी था और यह भी कि माता-पिता का साथ उन्हें परिवार समाज की इकाई के रूप में क्या महत्व रखता है, यह स्पष्ट करेगा और बच्चों को उनके माता-पिता के साथ समय बिताने का अवसर भी देगा।

इसके साथ-साथ वह वहाँ पहुंचने के रास्ते में यातायात के साधनों से परिचित हो सकेंगे। संग्रहालय में पहुँचने के उपरांत वे हमारे देश भारत की धरोहर से परिचित हो सकेंगे, सामाजिक विज्ञान विषय के अंतर्गत आने वाले पाठ्यक्रम को भली-भाँति सरलता से ग्रहण कर सकेंगे और अन्य विषयों के उपागम में भी सहजता महसूस करेंगे। यहाँ पर विभिन्न कलात्मक व सांस्कृतिक कार्यक्रम भी समय-समय पर प्रस्तुत होते हैं जिन से रूबरू होकर विद्यार्थी हमारे प्रिय देश भारत की विविधता में एकता का साक्षात समन्वय देख सकेंगे तथा गौरवान्वित हो सकेंगे।

जब मैं यहाँ पर आई थी तब यहाँ पर भारत के महान संत कबीर जी के जीवन से परिचित हुई तथा उनके जीवन से अमूल्य सीख प्राप्त करते हुए उनके भजनों का आनंद उठाने का भी अवसर मिला था।

इन्हीं सभी बातों को ध्यान में रखते हुए मैंने इस गतिविधि का अपनी छात्राओं के सर्वांगीण विकास के लिए चयन किया था।
इस गतिविधि के अंतर्गत छात्राओं को अपने माता-पिता के साथ वहाँ पर जाना था, उन्होंने क्या सीखा इस पर एक रिपोर्ट लिखनी थी, अपने इन बेहतरीन अनुभवों को एक दूसरे के साथ साझा करना था, तथा कक्षा के व्हाट्सएप ग्रुप में उन्हें गतिविधि से संबंधित कुछ चित्र भी संलग्न करने थे।

जैसा कि मेरा अनुमान था विद्यार्थी इस गतिविधि को अवश्य करेंगे। दीक्षा, कक्षा छठी की विद्यार्थी ने सबसे पहले इस कार्य को किया तथा इस अनुभव को साझा किया जिसके बाद और भी छात्राओं ने इस गतिविधि में बढ़ चढ़कर भाग लिया।

यदि हम अध्यापक होने के नाते प्रत्येक कार्य को विद्यार्थियों के लिए उपयोगी परंतु रोचक बनाने का प्रयास करें तो वे अवश्य ही उसमें रुचि लेंगे तथा गृह कार्य एक कार्य मात्र ना रहकर अधिगम विस्तार व निरंतर सीखने की प्रक्रिया के विस्तार में साझेदार हो जाऐंगे।

इस प्रकार की गतिविधि को विद्यार्थियों के साथ साझा करने से पूर्व यह बेहतर होगा कि शिक्षक स्वयं उसका पूरा अवलोकन कर लें जिससे वे कार्य को अपने विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम से जोड़कर पूर्ण लाभ उठा सकें तथा उन को प्रोत्साहित भी कर सकें।

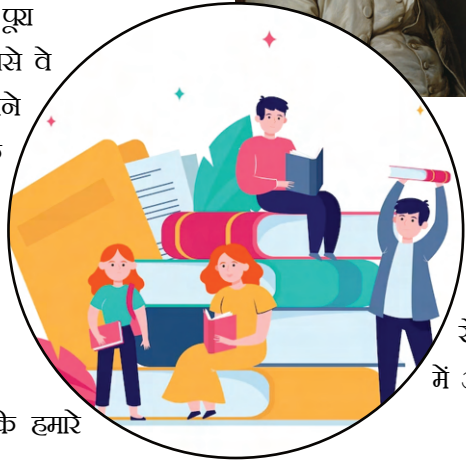

प्रयास यह है कि हमारे बच्चे गृहकार्य का नाम सुनकर असहज न हों अपितु उसके साथ होने वाले लाभ को अनुमानित कर सकें।

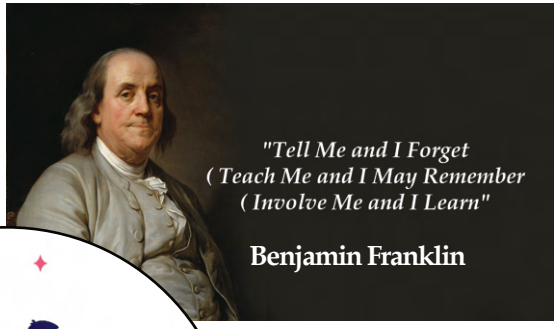

विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है कि विद्यार्थी ऐसी गतिविधियों में ज्ञानार्जन में स्वयं सक्रिय रूप से भागीदार बनें ताकि सही अर्थों में अधिगम (लर्निंग) संभव हो।

पर्यावरण स्थायित्व के लिए एक पहल

डॉ. प्रीति शर्मा
लेक्चरर इंग्लिश, RPVV/ASOSE
सेक्टर 11, रोहिणी

पर्यावरण संरक्षण और स्थायित्व आजकल हमारे समय के सबसे अधिक चर्चित और महत्वपूर्ण विषयों में से एक है। प्राकृतिक संसाधनों की भारी खपत, अपर्याप्त जल आपूर्ति, जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई और प्रदूषण आदि कारण पृथ्वी के पर्यावरण को धीरे-धीरे खतरे में ला रहे हैं।

इन समस्याओं का सामना करने के लिए हमें जागरूकता फैलाने, सही दिशा में कदम उठाने और समय रहते संरक्षण के प्रति सक्रिय योगदान देने की आवश्यकता है। बच्चे हमारे समाज के भविष्य होते हैं और उनका योगदान पर्यावरण संरक्षण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। इसी बात को ध्यान रखते हुए RPVV/ASOSE सेक्टर 11, रोहिणी में पर्यावरण संरक्षण और समृद्धि के प्रति छात्रों के योगदान को सराहना देने का प्रयास किया है। हमारे विद्यालय के पीछे एक छोटी सी वाटिका (पार्क) है, देखभाल छात्र ही करते है। इस वर्ष लगभग 100 पौधे रोपित किए गए हैं।

इस पौधारोपण के माध्यम से हमारे द्वारा पर्यावरण संरक्षण का समर्थन कर रहे हैं।

हमारे स्कूल में एक ईको क्लब है, जिसके सदस्य छात्र प्रतिदिन प्रार्थना सभा के समय में पर्यावरण को हरा-भरा और स्वच्छ रखने में योगदान देते हैं। इससे वे पर्यावरण के प्रति जागरूक और संवेदनशील हो रहे हैं और सुस्ती और निष्क्रियता को खत्म करने के लिए प्रेरित भी हो रहे हैं।

एक अन्य प्रयास के अन्तर्गत छात्र अपने खाने को ले जाने के लिए पॉलीथीन का उपयोग नहीं करते, जिससे उनके द्वारा उत्पन्न कचरे की मात्रा को कम किया जा रहा है। स्कूल में कक्षाओं में कोई कूड़ेदान जान बूझ कर नहीं रखे गए हैं ताकि छात्र अपना कचरा न फेंके बल्कि उसे अपने साथ रखें। इससे उनमें कम कचरा उत्पन्न करने की समझ पैदा होगी।

इससे पर्यावरण को संरक्षित रखने में मदद मिलती है और स्कूल का कचरा प्रबंधन भी बेहतर हुआ है।

यह छात्रों के आपसी सहयोग और सामर्थ्य का उदाहरण है जो अपने समय और शक्ति का समुचित उपयोग करके पर्यावरण संरक्षण में एक सकारात्मक बदलाव ला रहे हैं।

उनके इन प्रयासों की प्रशंसा करके छात्रों को सम्मान और प्रोत्साहन देना हमारे समाज के लिए एक श्रेष्ठ कदम होगा, क्योंकि वे हमारे भविष्य को सुरक्षित और स्वच्छ बनाने में मदद कर रहे हैं।

डॉ. लक्ष्मण सिंह
इको क्लब इंचार्ज, सर्वोदय सह शिक्षा उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, मुनिरका

एक विद्यालय ऐसा भी

"आप किसी भी एक दुर्लभ फल वाले वृक्ष का नाम लें, और हम आप को वह यहाँ अपने स्कूल में दिखा सकते है!" सर्वोदय सह शिक्षा उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, मुनिरका में आप का स्वागत है।

जी हाँ, एक विद्यालय, जो अपने फलों के बगीचे के नाम से अपनी पहचान रखता है।

आप विद्यालय परिसर का एक चक्कर लगायेंगे तो पायेंगे कि विद्यालय में लगभग 45 प्रकार के फलों के पेड़-पौधे, लगभग सभी किस्मों के आम, आँवला, संतरा, कीवी, अंगूर, पपीता, चिकू, सेब, शरीफा, चेरी, अखरोट, बादाम आदि लगे हुए हैं एवं लगभग सभी पेड़

पौधों में फल लगते हैं। मैं, डॉक्टर लक्ष्मण सिंह, इको क्लब इंचार्ज, अपने प्रधानाचार्य जी, सभी शिक्षक साथियों एवं विद्यार्थियों की अथक मेहनत का परिणाम दिखाने, आपको प्रकृति के द्वारा प्रदत्त एक खास अनुभव की तरफ ले चलता हूँ, जिसे हमने और हमारे मुनिरका परिवार के सभी सदस्यों एवं आसपास रहने वाले लोगों ने महसूस किया है।

हमारा यह स्कूल सर्वोदय सह शिक्षा उच्चतर माध्यमिक विद्यालय है, जो कि मुनिरका पहाड़ी वाले स्कूल के नाम से जाना जाता है। यहाँ पर अरावली पर्वत श्रृंखला का विस्तार है। परंतु भूखंड एवं मृदा की दृष्टि से क्षेत्र अत्यंत सीमित है।

मैं सितंबर 2018 में, एक शारीरिक शिक्षक के रूप में शिक्षा निदेशालय द्वारा चयनित हुआ और तभी से यह विद्यालय मेरी कर्मभूमि बन गया। मुनिरका विद्यालय में पेड़ पौधे तो थे लेकिन बहुत सीमित मात्रा में। एक प्रकृति प्रेमी होने की वजह से मुझे यहाँ प्रकृति के विस्तार तथा कुछ नया करने की अपार सम्भावनाएँ नजर आई।

प्रकृति के साथ जुड़ाव की जब हमने अपने विद्यालय के बच्चों से चर्चा शुरू की तो प्रारंभ में बच्चों में कुछ खास इच्छा शक्ति एवं उत्साह दिखाई नहीं दिया। लेकिन धीरे-धीरे जब हमने रोज नए-नए पौधे लगाने और बच्चों को उनका महत्व एवं विशेषताएँ बताने की शुरुआत की तो उनमें प्रकृति के लिए उत्साह एवं जिज्ञासा बढ़ने लगी। प्रधानाचार्य जी का साथ एवं मार्गदर्शन काफ़ी काम आया और जब बच्चों के साथ मिलकर हमने यह काम करना शुरू किया तो हमारे बहुत से शिक्षक साथी भी इस तरफ आकर्षित हुए और वे भी प्रकृति से जुड़ी हुई गतिविधियों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने लगे।

बच्चों के साथ मिलकर काम करना एक अत्यंत सुखद एहसास है। आज बच्चों के अंदर पेड़- पौधों एवं प्रकृति को लेकर एक अलग ही उत्साह है। प्रकृति की तरफ उनका झुकाव देखते ही बनता हैं।

विद्यालय के लगभग सभी बच्चे वृक्षारोपण, नुक्कड़ नाटक, स्लोगन लेखन, वाटर बॉडी विजिट पर जाना बेहद पसंद करते हैं।

हमारे विद्यालय में लगभग 500 प्रकार के पेड़ - पौधे हैं। इन्हें विशेष कैटेगरीज़ में व्यवस्थित किया गया है। जैसे स्पाइस गार्डन, मेडिसिनल प्लांट्स, किचन गार्डन, हर्बल गार्डन, हैंगिंग गार्डन इत्यादि।

इनकी सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए हमारे प्रधानाचार्य, शिक्षकों एवं लगभग 100 विद्यार्थियों द्वारा प्लांटेशन एडॉप्शन ड्राइव के अंतर्गत विभिन्न पेड़ पौधों को अडॉप्ट किया जाता है एवं उनकी सुरक्षा की जिम्मेदारी विद्यार्थी और शिक्षक स्वयं लेते हैं।

लिखे हैं।

जब भी विद्यार्थी पेड़ पौधों पर लिखे नाम को पढ़कर उनको ध्यान से देखते हुए नजर आते हैं एवं उनकी पहचान करने की कोशिश करते हैं तो यह एहसास होता है कि बच्चों का प्रकृति के प्रति रुझान बढ़ रहा है। जब भी बच्चों को फूल, पत्तियों एवं फलों की तरफ देखते हुए पाता हूँ तो लगता है कि जैसे हमारी मेहनत सच में रंग ला रही है।

विद्यालय प्रांगण में उपस्थित छुईमुई, जिसे हम लाजवंती के नाम से भी जानते हैं, फिश पॉन्ड, लोटस, वाटर लिली आदि सभी के आकर्षण का केंद्र बने रहते हैं। हाल ही में हम ने हमिंग बर्ड्स, मैना, हिमालयन बुलबुल और बया जैसे पक्षियों को भी घोंसले बनाते हुए देखा।

विद्यालय प्रांगण के सभी सदस्य पेड़ पौधों के प्रति और जागृत हो सकें तथा उनके बारे में अधिक से अधिक जानकारी एकत्रित कर सकें इसलिए हमने बच्चों की सहायता से लगभग सभी पौधों एवं वृक्षों पर उनके हिंदी, अंग्रेजी और उनके बोटैनिकल नाम

बच्चों के साथ-साथ यह बड़ों को भी अपनी ओर समान रूप से आकर्षित करते हैं। उन्हें देखकर बड़ों के चेहरों पर भी बच्चों जैसी जिज्ञासा एवं मुस्कान उभर आती है।

पत्ता, काली मिर्च हींग, हल्दी, अजवाइन आदि पौधे हैं। बच्चे आपको बहुत ही उत्सुकता से बताएँगे कि कौन सा पत्ता किस मसाले का है। जब बच्चे उनके बारे में बता रहे होते हैं तो उनकी जिज्ञासा और आत्मविश्वास का स्तर बहुत ही अलग दिखाई देता है।

जब बच्चे छुईमुई के पौधों को छूते हैं तो उनके पत्ते मुरझा जाते हैं, तब बहुत से बच्चों का सवाल होता है कि ऐसा क्यों होता है? बच्चों की यह जिज्ञासा एहसास दिलाती है कि हमारा प्रयास सही दिशा में जा रहा है। छुईमुई की संवेदना बच्चों में भी औरों के प्रति संवेदनशील होने की भावना को बढ़ाती है।

विद्यालय की सुंदरता को चार चाँद लगाते हमारे हैंगिंग गार्डन की सभी फूल पत्तियां मुस्कुराती सी प्रतीत होती हैं। उसे देखकर सभी के मन का गार्डन भी प्रफुल्लित हो जाता है। साथ ही यह शांत, सुंदर, मनोरम, तनाव रहित दृश्य मन एवं मस्तिष्क को तरोताजा भी कर देता है।

स्पाइस गार्डन में लौंग, इलायची, दालचीनी, तेज

किचन गार्डन शिक्षकों की पसंदीदा जगह है, जिससे बहुत से लोग लाभान्वित होते हैं। इसमें बैंगन मिर्ची, सेम फली, टमाटर इत्यादि मौसमी सब्जियाँ लगी हुई हैं। जब भी हम सब इन सब्जियों को लगा हुआ देखते हैं तो बहुत ही खुश नजर आते हैं।

हर्बल गार्डन में बच्चों का बहुत अहम योगदान है। इन्सुलिन का पौधा, भृंगराज, अर्जुन का वृक्ष, लेमनग्रास, तुलसी, गिलोय, नीम, अमलतास, लटजीरा, एलोवेरा आदि के माध्यम से बच्चे हमारी परंपरागत प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति से भी अवगत हो रहे हैं। कोरोना के वक्त विद्यालय के हर्बल गार्डन के औषधीय पौधों से बहुत सारे लोग लाभान्वित हुए।

आज हमारा विद्यालय अपने इस अद्वितीय प्रयोग की वजह से अपनी एक खास पहचान बना चुका है। आसपास के विद्यालयों से भी शिक्षक बिरादरी , मेण्टर टीचर्स, अधिकारीगण, और कुछ मीडिया प्रभारी समय समय पर यहाँ आते रहते हैं, जिससे हमारा मनोबल बढ़ा है।

हाल ही में विभाग द्वारा शुरू किए गए ग्रीन स्कूल अवार्ड के लिए चयनित विद्यालयों में हमारा स्कूल भी एक था।

सारांश में, गैजेट से भरी इस दुनिया में आज जहाँ हर कोई टेक्नोलॉजी का गुलाम सा बनता जा रहा है और प्रकृति से अनजान सा होता जा रहा है वहाँ प्रकृति के प्रति हमारे बच्चों का यह झुकाव एक आशा की किरण बनकर सामने आया है।

एक ऐसी आशा की किरण जो हमें अपने अस्तित्व के लिए प्रकृति से जुड़ने के लिए प्रेरित करती है।

हमारा प्रकृति के प्रति यह छोटा सा प्रयास हमें सिखाता है बिना पर्यावरण को नुकसान पहुँचायें आगे बढ़ाना, मानव एवं प्राणी जगत के प्रति संवेदनशील, विनम्र एवं दयालु होना, बिना स्वार्थ के दूसरों की सहायता करना और एक प्रदूषण रहित स्वच्छ पर्यावरण का निर्माण करना जो कि हर बच्चे एवं हर प्राणी का एक मूल अधिकार होना चाहिए।

हमारी प्रकृति ने एक माँ की तरह निस्वार्थ भावना एवं प्रेम से हमारा जो भरण पोषण किया है हमारा यह एक छोटा का प्रयास उसके इस उपकार के प्रति समर्पित है।

बीना नयाल
विज्ञान अध्यापिका
सर्वोदय बालिका विद्यालय, नंद नगरी विस्तार

तकनीक के नियंता बने ना कि गुलाम

21 वीं शताब्दी विज्ञान और तकनीक की शताब्दी है, देश और दुनिया में नित नई तकनीकों का आविष्कार हो रहा है। दुनिया के तमाम देश तकनीक के क्षेत्र में लगातार प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं।

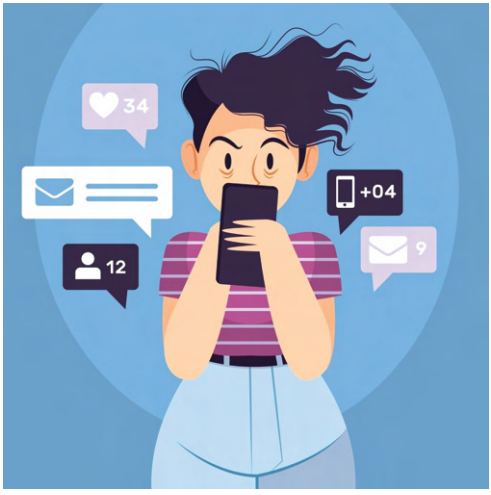

आज मानव विकास के सर्वोच्च शिखर पर बैठा है। उसकी धरती पर रह कर चाँद पर पहुँचने की अभिलाषा कामयाब हो गयी है।

मनुष्य अपने विवेक और कल्पना शक्ति के बल पर नित नई तकनीक का इजाद कर भौतिक जीवन को सरल से सरलतम बना रहा है जैसे किसी जादू की तरह दुनिया सिमट कर वाकई मुट्ठी में आ गई है।

तकनीक ने हर क्षेत्र को प्रभावित किया है। शिक्षा का क्षेत्र भी इस से अछूता नहीं है।

किताबों का स्थान ई- बुक्स ने ले लिया है। फोन, टैबलेट, लैपटॉप जैसे माध्यमों से किसी भी विषय की जानकारी आप कुछ ही पलों में हासिल कर सकते हैं। बच्चों की तकदीर सँवारने वाला काला श्यामपट्ट (ब्लैकबोर्ड) भी तकनीक के रंग में रंग कर श्वेत स्मार्ट बोर्ड हो गया है। विज्ञान और तकनीक के बूते पर हमने अपने जिंदगी के अनेक श्याम आयामों को श्वेत और सुनहरे रंग में रंग दिया है।

तकनीक ने अनेक अदृश्य चीजों को दृश्यमान तथा मानव के लिए सुलभ कर दिया है, लेकिन हर वस्तु के सकारात्मक व नकारात्मक दोनों प्रभाव होते हैं। आज तकनीक के सकारात्मक प्रभावों का बुद्धिमतापूर्ण व विवेकपूर्ण इस्तेमाल ही समय की माँग है।

उदाहरण के तौर पर लॉकडाउन के दौर में जब विद्यालयों में दैनिक शैक्षिक गतिविधियाँ संभव नहीं हो पा रही थी तब बच्चों और शिक्षकों को ऑनलाइन क्लास का विकल्प मिला जो तत्कालीन परिस्थितियों में बेहद उपयोगी था। कई बच्चों के लिए यह पढ़ाई जारी रखने का एकमात्र तरीका था। यहाँ बच्चे की समझदारी और माता-पिता की निगरानी में इस सहूलियत का प्रभाव प्रत्येक बच्चे पर अलग अलग पड़ा।

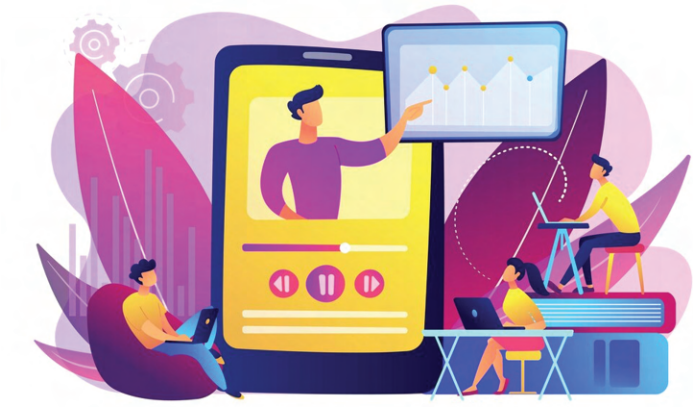

आपदा के समय छात्रों में मानसिक रोगों और अवसाद के मामले भी सामने आए। इसका एक कारण एकल परिवार और माता-पिता दोनों का घर से बाहर नौकरी या अन्य कार्य के सिलसिले में बाहर रहना भी है। ऑनलाइन क्लास के दौरान बच्चे कई बार सोशल मीडिया और विभिन्न सोशल नेटवर्किंग साइटों से आपत्तिजनक सामग्री या अन्य अनुपयोगी सामग्री से भी अवगत हो जाते हैं और धीरे-धीरे किशोर बच्चे इसके आदी हो जाते हैं। बच्चे तो फिर भी बच्चे हैं हम वयस्क भी इसके इस कदर आदी हो चुके हैं कि बिना मोबाइल फोन के थोड़ी देर के लिए भी नहीं रह सकते। इस प्रभाव को काम करने के लिए सही मार्गदर्शन और बेहतर कनेक्ट की आवश्यकता हैं। इस आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए दिल्ली के शिक्षकों को बेहतर सोशल- इमोशनल वेल बीइंग और मानसिक स्वास्थ्य की ट्रेनिंग्स दी जा रही हैं।

हम मोबाइल फोन, लैपटॉप या अन्य यंत्रों का प्रयोग व्यावसायिक, शैक्षणिक व अन्य गतिविधियों के लिए सफलतापूर्वक कर पाते। आज से 20 साल पहले तक व्यक्ति को किसी भी काम में फोकस करने में ज्यादा कठिनाई नहीं होती थीं। पर अब उन्नत तकनीक की दुनिया में ये डिस्ट्रैक्शन फोन पर हर समय नोटिफिकेशन के रूप में उपलब्ध रहते हैं।

सूचना और डिजिटल क्रांति के जिस युग में हम जी रहे हैं वहाँ इन इलेक्ट्रॉनिक गैजेट से दूरी संभव ही नहीं है। आज मोबाइल फोन से दूर रहना मानो मानव विकास की दौड़ में पीछे रहना है। लेकिन विकास केवल बाहरी नहीं होता आंतरिक भी होता है। आंतरिक विकास के अभाव में बाहरी विकास एकांगी तथा अपूर्ण है। निवारण है, तकनीकी सुविधाओं का सही प्रयोग, मानसिक व शारीरिक श्रम के तमाम विकल्पों से अवगत रहना, एकाकी समय का सदुपयोग, और मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता।

आज बच्चा-बच्चा अवसाद के बारे में भली-भाँति जानता है इसका कारण है कि तकनीक ने उसे आधुनिक सुविधाओं से लैस तो कर दिया परंतु उसकी मूल प्रवृत्ति व कोमल भावनाओं को मृत कर दिया। एक सही दृष्टिकोण और समुचित प्रयास निश्चय ही हमें सही समाधान की ओर ले जा सकता है।

नई-नई तकनीकों पर आधारित ये डिवाइस रोजमर्रा के जीवन को सरल बनाने में स्वयं की विकास यात्रा के सहयोगी के रूप में है, इन्हें इसी रूप में स्वीकार कर लेना ही इनकी सही पहचान है।

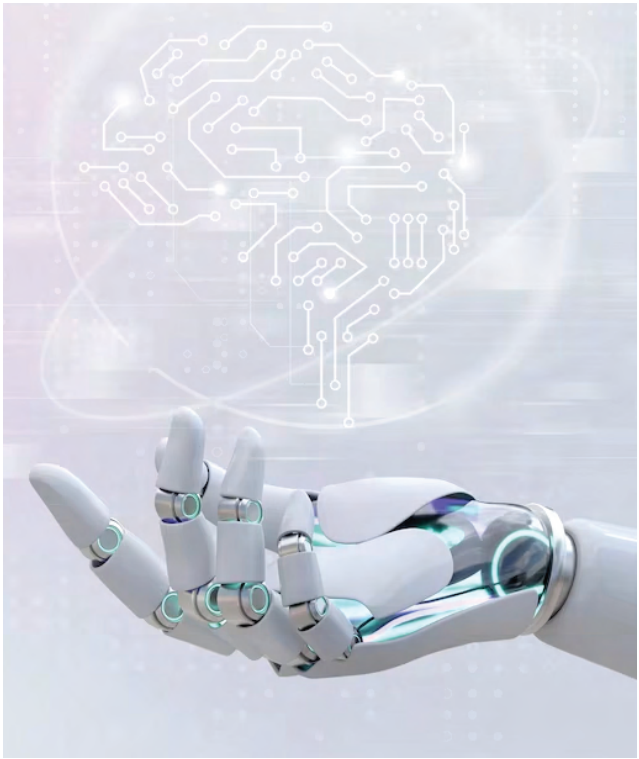

हम खुद पर संयम रखे, जिससे तकनीक हमारी सहयोगी बने पर हम तकनीक से नियंत्रित ना हो।

जब हम विवेक व जागरूकता का परिचय देकर मोबाइल फोन का उचित इस्तेमाल करेंगे, तभी बच्चे हमारा अनुकरण कर इसका सही व सार्थक उपयोग कर पाएँगे अन्यथा आगे आने वाली पीढ़ी के गलत व्यवहार व आदतों के लिए हम स्वयं जिम्मेदार होंगे। वैसे भी इस समय आर्टिफ़िशियल इंटैलिजेंस पर आधारित तकनीक का चारों तरफ शोर है।

इसलिए अब सँभलने का वक्त आ गया है यदि विवेक व बुद्धि पर तकनीक ऐसे ही हावी रही तो कृत्रिम बुद्धिमता पर आधारित रोबोट भविष्य में हमारा स्थान ले लेंगे, ऐसा भी संभव है।

विज्ञान व तकनीक विशेषज्ञ आए दिन पहले से अधिक विकसित और चौंकाने वाली तकनीकी इजाद कर रहे हैं यह स्वागत योग्य है। यदि तकनीकी का इस्तेमाल सोच समझ कर नहीं किया गया तो भविष्य में यह मनुष्य का विकल्प बन जाए ऐसी भी संभावना है। इसलिए वक्त रहते सचेत होने की आवश्यकता है जिससे तकनीक वरदान साबित हो न कि भस्मासुर की भाँति हमें भीतर से खोखला करना आरंभ कर दे।

बस ध्यान रहे तकनीक हमसे है हम तकनीक से नहीं हैं। अनुशासन और संयम हमारी संस्कृति और विचार-व्यवहार का अभिन्न अंग रहा है। आज आवश्यकता है कि तकनीक के मामले में

अंकिता शर्मा
असिस्टेंट टीचर प्राइमरी
एस के वी पुष्प विहार सेक्टर 1

टीएलएम: बच्चों को सिखाने का अनूठा प्रयास

शिक्षण प्रक्रिया एक जटिल प्रक्रिया है, प्रतिदिन शिक्षक कई चुनौतियों का सामना करते हैं। सहायक सामग्री वह जादुई सामग्री है जो बच्चों को खेल-खेल में सीखने में मदद करती है तथा शिक्षकों की विभिन्न चुनौतियों का हल करती हैं।

एक चीनी कहावत है
मैंने सुना मैं भूल गया,
मैंने पढ़ा मुझे याद हुआ,
मैंने किया मैं समझ पाया

विद्यार्थियों की एकाग्रता का समय अल्प होता है और इन सामग्रियों द्वारा अल्प समय में बच्चों को स्थायी ज्ञान प्राप्त होता है। वे गतिविधियों के माध्यम से अधिकतम सीखते हैं। एक सर्वेक्षण के अनुसार बच्चों का 85% मानसिक विकास 6 वर्ष की आयु तक हो जाता है। यदि आपने निर्माण के दौरान ईमानदारी से परिश्रम किया तो इमारत सुंदर व मजबूत बनेगी, यदि आप उसमें अपना घर भी बसाएँगे तो यह भवन सालों साल आपकी आपके परिवार की भीषण वर्षा, कड़ी धूप, तेज आँधियों व तूफान से रक्षा कर सकेगा। भूचालों में भी अटल खड़ा रहेगा।

इसके विपरीत यदि निर्माण के समय आपने इस घर के प्रति लापरवाही बरती, उसकी योजना ठीक से नहीं बनाई या उसपर मेहनत नहीं की तो शायद यह घर पहली आँधी में ही ढह जाए या बरसात में भरभरा कर गिर जाए।

इमारत के निर्माण में प्राथमिक शिक्षकों का एक अनूठा योगदान है, जो नन्हें नन्हें बच्चों को क्रियात्मक विधियों द्वारा पढ़ाते व सिखाते हैं। इस प्रक्रिया में शिक्षक सहायक सामग्री बच्चों के लिए बुनियादी शिक्षा की रीढ़ है या यूँ कह सकते हैं कि नीव का पत्थर है।

दिल्ली शिक्षा विभाग पिछले कुछ वर्षों से रूपांतरण के दौर से गुज़र रहा है और अध्ययन अध्यापन विधि में बदलाव ला रहा हैं।
इसी बदलाव में एक विशेष चरण है शिक्षक सहायक सामग्री प्रतियोगिता।

सहायक सामग्री का प्रयोग अधिकांश विद्यालयों में हो रहा है परंतु अब से पहले प्राथमिक शिक्षकों के पास उनके द्वारा बनाई गई शिक्षक सहायक सामग्री को आगे प्रदर्शित करने का कोई भी मंच नहीं। जिसके कारण सभी शिक्षकों की प्रतिभा व शिक्षण कौशल उनकी कक्षा कक्ष व स्कूल तक सीमित कर रह जाता था, परंतु अब हम सबको शिक्षक सहायक सामग्री प्रतियोगिता के माध्यम से वह मंच मिल चुका है, जहाँ पर शिक्षक सहायक सामग्री के माध्यम से हम अपनी शिक्षण विधियाँ को प्रदर्शित कर रहे हैं व अन्य शिक्षक साथियों द्वारा अपनाई जा रही शिक्षण विधियों को देख सकते हैं और प्रयोग में ला सकते हैं।

प्रस्तुत शिक्षक सहायक सामग्री मैने मिशन मैथ्स के अंतर्गत बनाई है। यह मुख्यतः गणित विषय के संदर्भ में है किंतु प्राथमिक स्तर के सभी विषयों का इसमें समावेशन किया गया है।

आड़ी, सीधी, तिरछी, वृताकार रेखाओं से शुरू करते हुए नाप तौल की इकाई तक प्रत्येक प्रकरण का विस्तृत तथा गहन प्रदर्शन इस सहायक सामग्री के माध्यम से किया गया है। गणित के अतिरिक्त प्राथमिक स्तर के अन्य विषय हिंदी, अंग्रेजी आदि को खेल-खेल में बच्चे आसानी से समझ रहे हैं।

के त्रिविमय प्रभाव एवं ध्वनि यंत्र से निकलने वाली कविताओं के माध्यम से आकार, गिनती, जमा, घटा आदि से संबंधित विषय वस्तु को सीखने में सक्षम हुई।

इस सहायक सामग्री में विविध तकनीकों तथा श्रव्य दृश्य उपकरणों का उपयोग किया गया है। सहायक सामग्री को खोलने व बंद करने में, इसकी पहेलियों को हल करने में बच्चों का स्थूल व सूक्ष्म गद्यात्मक कौशल का भी विकास हो रहा है, जो सेलेब्रल पाल्सी से पीड़ित बच्चों के लिए अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि हैं।

बच्चों में एक अभूतपूर्व परिवर्तन हुआ है। हमारे विद्यालय में कुल 30 दिव्यांग बच्चे हैं, जिनमें से 10 प्राइमरी के हैं। अधिकांश रूप से देखा गया है कि ऑटिज्म और ए डी एच डी के बच्चे अधिक है। कक्षा 2 में एक बच्ची जो ऑटिज्म से पीड़ित है, वह कक्षा में रुचि नहीं लेती लेकिन जब यह सहायक सामग्री कक्षा में प्रदर्शित की गई तो अन्य विद्यार्थियों के साथ वह भी इसके रंग, इसमें प्रयोग किए गए खेल, पहेली व ध्वनियों के प्रति आकर्षित हुई और खेल-खेल में ही वह गणित की कई अवधारणाओं को समझ सकी।

गतिविधियों व खेल में भाग लेकर बच्चों की ऊर्जा का सकारात्मक उपयोग हो रहा है तथा बच्चे नई-नई अवधारणाओं का ज्ञान भी प्राप्त कर रहे हैं।

एक अन्य विद्यार्थी जो कक्षा एक की छात्रा है वह अल्प दृष्टि बाधित है। उसे श्यामपट्ट पर देखने में परेशानी होती है। इस सहायक सामग्री

शिक्षा का अधिकार 2009 के तहत विद्यालय में समावेशी कक्षाओं का प्रावधान किया गया है। इस सहायक सामग्री का प्रयोग हम समावेशी कक्षाओं में भी कर रहे हैं। दिव्यांग बच्चों के निदानात्मक शिक्षण के लिए यह सहायक सामग्री प्रयोग में लाई जा रही है। उनके अधिगम के विशिष्ट उद्देश्यों की प्राप्ति में यह सहयोग कर रही है। इस सहायक सामग्री में गणना सिखाने हेतु प्रतीक के रूप में चंद्रयान का प्रयोग किया गया है।

पासा फेंकने पर जितने अंक आते हैं उतने अंक चंद्रयान आगे चलता है। इससे समसामयिक घटना की भी जानकारी छोटे बच्चों को प्राप्त हो रही है, साथ ही साथ उनमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण का भी विकास हो रहा हैं।

जीन पियाजे जो एक प्रसिद्ध बाल मनोवैज्ञानिक हैं, उन्होंने भी बच्चों को छोटा वैज्ञानिक कहा है। बच्चे अनुभवों द्वारा ज्ञान का खुद निर्माण करने के लिए सक्षम हैं। हमें बच्चों को शिक्षा परोसनी नहीं चाहिए अपितु बच्चों को इस प्रक्रिया का आनंद लेने देना चाहिए।इस सहायक सामग्री में कई मूल्य आधारित कहानियाँ भी रिकॉर्ड की गई है।

गणित की अवधारणाओं के साथ-साथ बच्चों में मूल्यों का भी निर्माण हो रहा है, क्योंकि शिक्षा का सही उद्देश्य तथ्यों का नही बल्कि मूल्यों का सही ज्ञान होना है।

मेरे द्वारा प्रस्तुत शिक्षक सहायक सामग्री का नाम 'मैजिकल बॉक्स ऑफ मैथमेटिक्स' हैं और इस जादुई पिटारे द्वारा मैंने बच्चों के जीवन में मैजिक लाने का प्रयास किया हैं।

मैं गर्व के साथ कह सकती हूँ कि सहायक सामग्री का प्रयोग प्रारंभिक शिक्षक पद्धति में काफी बदलाव ला रहा है जो कि शिक्षा विभाग में क्रांति की एक नई शुरुआत है। इसके लिए मैं शिक्षा विभाग का धन्यवाद करना। जिसके माध्यम से हमें राज्य स्तरीय मंच पर अपनी शिक्षण पद्धतियों को प्रदर्शित करने का मौका मिला। भविष्य में भी मैं छोटे बच्चों की शिक्षा को रुचि कर व प्रभावपूर्ण बनाने के लिए इसी तरह से नई-नई शिक्षण पद्धतियों का उपयोग करती रहूँगी।

किताबों से आगे की यात्रा

मोनिका जगोता
लेक्चरर अंग्रेज़ी
एस के वी डिस्ट्रिक्ट सेंटर, विकासपुरी

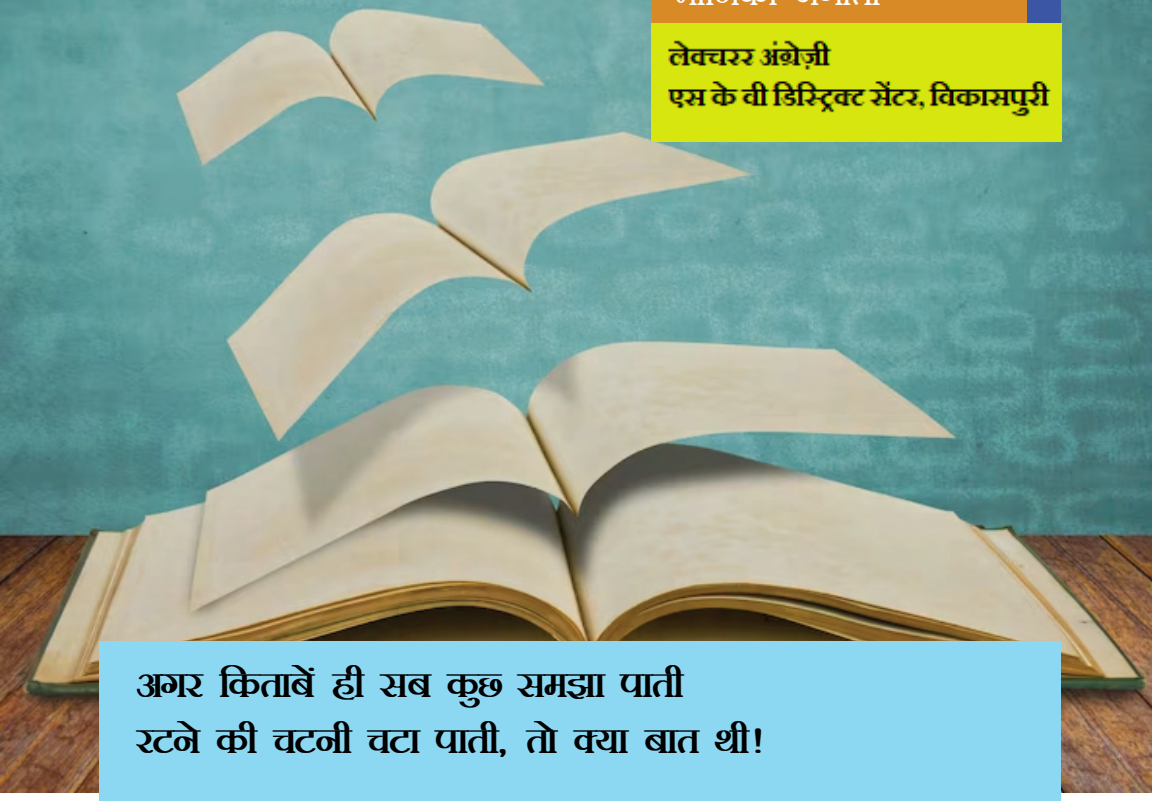

अगर किताबें ही सब कुछ समझा पाती
रटने की चटनी चटा पाती, तो क्या बात थी!

पर जीना धरातल पर होता है
यहाँ समझ कर समझ बढ़ती है
कर कर के काम करना आता है
करते करते कुछ और नया हो जाता है।

किताबों की शरण में नए शब्द और विचार मिल सकते हैं
पर सीखने सिखाने वाले सोच-समझ का ही व्यवहार
करते हैं।

विगत चार वर्षों से मैं गवर्नमेंट बॉयज़ सीनियर सेकेंडरी स्कूल न०.2, बिंदापुर (1618314) में मेंटोर टीचर की भूमिका में अपना योगदान दे रही हूँ ।

इस वर्ष, विद्यालय को और भी बेहतर बनाने के लिए प्रधानाचार्य महोदय एवं उप-प्रधानाचार्य महोदय के निर्देशन में कुछ स्व प्रेरित अध्यापकों के साथ एक चर्चा का आयोजन किया गया ।

'अपने छात्रों के लिए इस वर्ष और क्या कर सकते हैं' विषय पर हमारी जो विस्तृत चर्चा हुई, वह कुछ इस प्रकार है:

सीखना एक सतत् प्रक्रिया है। कक्षा में विद्यार्थी सुनकर, बोलकर, देखकर, लिखकर और समझकर सीखते हैं। उनके हाथ में किताब पकड़ा देने से जहाँ कुछ विद्यार्थी उत्सुक हो जाते हैं, वहीं दूसरी ओर कुछ किताबी ज्ञान से सहम जाते हैं, और सोच लेते हैं कि पढ़ना लिखना तो उनके बस का है ही नहीं। इसके बहुत से कारण हैं और अधिकतर शिक्षक उनसे परिचित हैं ।

सुनने-बोलने की क्षमता प्राकृतिक है, और लिखना-पढ़ना अभ्यास से आता है। कोई भी विषय उस समय नीरस हो जाता है जब उसे केवल बताया जाता है। फिर विद्यार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे उसे सुनकर सीख लें और परीक्षा में रट कर लिख आएँ।

जीवन की परीक्षाएँ अनगिनत हैं। कब, कहाँ, किस मोड़ पर कौन सी चुनौतियाँ आएँगी और उनके पार कैसे जाना है, यह विद्यार्थी की समझ और उपाय कुशलता पर निर्भर करता है, उसके द्वारा रटे रटाये गये पाठ्यक्रम पर नहीं। एनईपी 2020 में भी रटकर सीखने के बजाय महत्वपूर्ण और विश्लेषणात्मक सोच पर जोर देने की बात कही गई है।

कक्षा में अध्यापक का निरन्तर प्रयास रहे कि विद्यार्थी में खुद से सोचने, समझने, विश्लेषण करने एवं तर्कसंगत निर्णय लेने की क्षमता विकसित हो।

इसके लिए कक्षा में विद्यार्थियों को प्रश्न पूछना सिखाना और प्रश्न पूछने के लिए उत्साहित करना आवश्यक है। साथ ही साथ अनेकानेक गतिविधियों के द्वारा छात्रों को विषय वस्तु की समझ बनाने का अवसर भी प्रदान किया जाए।

गतिविधियाँ जहाँ एक ओर पढ़ाई को सुगम बनाती हैं, वहीं दूसरी ओर बहुत से कौशलों, मूल्यों एवं व्यवहारों को विकसित करने में भी कारगर है।

भाषा एवं अन्य विषयों से संबंधित खेल, पहेलियाँ, रोल प्ले, कहानी लिखना एवं सुनाना, वास्तविक वस्तुओं का उपयोग करके प्रदर्शन करना, छात्रों को शैक्षिक भ्रमण पर ले जाना, विडियो दिखाना, रेडियो एवं पॉडकास्ट सुनाना, वृत्तचित्र दिखाना और ऐसी बहुत सी गतिविधियाँ हर छात्र को उसकी रुचि और क्षमता के अनुरूप जानने और सीखने में मदद करती है ।

यह तभी हो पाएगा जब अध्यापक स्वयं की विषय वस्तु की समझ को खुद से ही प्रश्न कर जाँचें, और फिर गतिविधियों द्वारा विद्यार्थियों को प्रेरित कर उनमें में भी कौतूहल और रचनात्मकता जगा दे।

इस सुखद चर्चा का निष्कर्ष यह रहा कि हिन्दी माध्यम कक्षा छठी-ब में विभिन्न विषयों के अध्यापकों ने सहयोग करके, कक्षा में गतिविधियों द्वारा पढ़ाकर नवाचार करने का बीड़ा उठाया है।

विद्यालय के नए प्रधानाचार्य श्री चेतन मलिक जी ने उप-प्रधानाचार्य श्री अरुण कुमार जी के साथ मिलकर यह यह किया है कि सभी विषयों के अध्यापक छठी-ब कक्षा में आपसी तालमेल के साथ बच्चों की आवश्यकताओं एवं रुचियों के अनुसार शिक्षण की गतिविधियाँ चुनेंगे और छात्रों के साथ इनका अभ्यास करेंगे।

साथ ही उन्होंने इस प्रयास की सफलता

सुनिश्चित करने हेतु सब प्रकार के साधन उपलब्ध कराने एवं विशेषज्ञों से प्रशिक्षण कराने का आश्वासन भी दिया है।

अध्यापकों ने गतिविधि आधारित पठन-पाठन कक्षा में आरम्भ भी कर दिया है। कहानी लिखना एवं सुनाना, चित्र बनाना, अध्यापक द्वारा पाठ के बारे में बताये जाने के बाद छात्रों का समूहों में उसपर चर्चा करना एवं निष्कर्ष का प्रस्तुतिकरण करना, खेल एवं तस्वीरों के द्वारा पाठ को समझना, विभिन्न पात्रों के मुखौटे बनाना एवं उनके साथ लघु नाटिका प्रस्तुत करना, रोल प्ले करना, पाठ को सरलता से समझने के लिए TLM बनाना जैसी गतिविधियाँ छात्रों को खूब भा रही हैं ।

कक्षा का निरीक्षण करते हुए मैंने पाया कि छात्रों में उत्साह है। वे बताने लगे कि सब अध्यापक गतिविधियाँ कराते हैं जिन्हें करते हुए उन्हें न सिर्फ़ मज़ा आता है बल्कि पढ़ाई भी अच्छी लगती है। अपना काम दिखाकर उन्होंने मुझे फ़ोटो लेने के लिए भी कहा।

अंत में, मैं यही कहना चाहूँगी कि हम सब गतिविधि-आधारित शिक्षण के द्वारा छात्रों का समग्र विकास करने का यथासंभव प्रयास कर रहे हैं। आशा है कि अन्य अध्यापक एवं विद्यार्थी भी ऐसा करने के लिए प्रेरित होंगे।

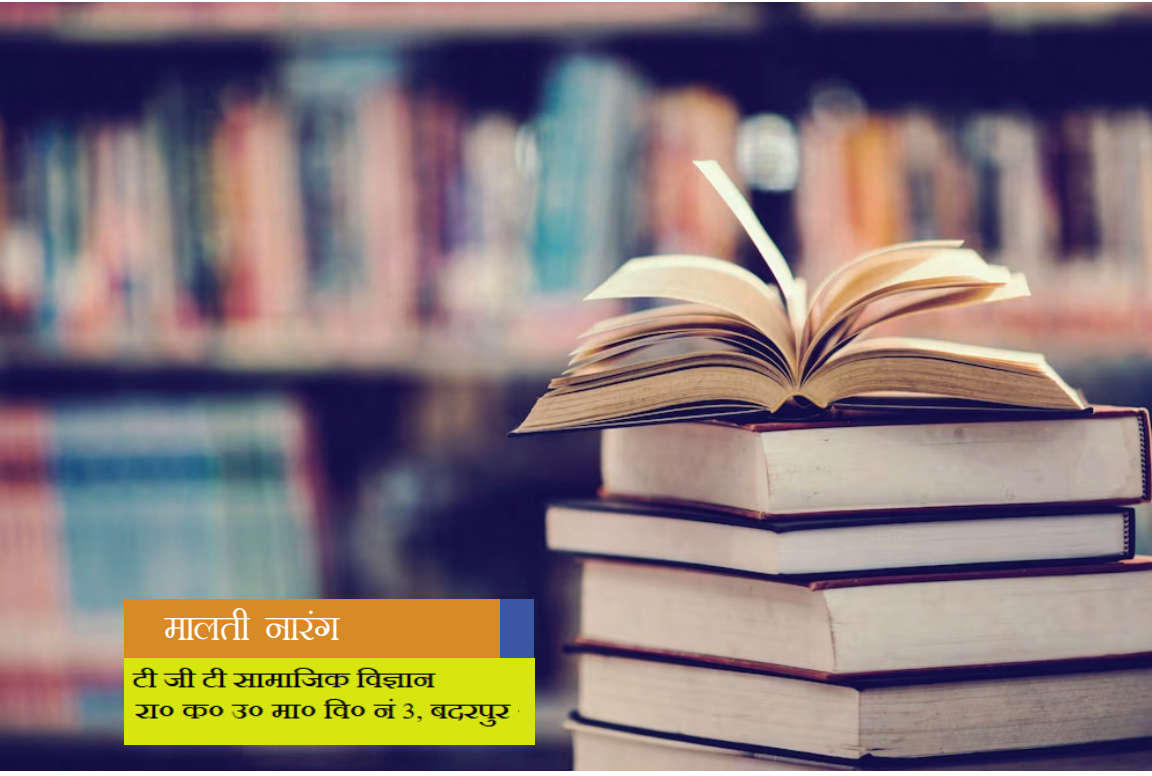

मालती नारंग
टी जी टी सामाजिक विज्ञान
रा० क० उ० मा० वि० नं 3, बदरपुर

रीड वीद स्टूडेंट्स की पाँचवी शृंखला: एक यादगार एहसास

राजकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय JJ कॉलोनी मदनपुर खादर -1925339 की ग्यारहवीं कक्षा की 10 छात्राएँ अलतशा, प्रज्ञा ,गुन गुन ,पैरी ,निशा अफशान ,मेंनिका, सुरक्षा, अर्पिता और रुख़सार ने अपने किताब पढ़ने के अनुभव को एक खूबसूरत प्रयास के रूप में हम सब के साथ साझा किया।

तो मैं आप सभी के साथ इस खुशनुमा परंतु चुनौतीपूर्ण सफ़र की कुछ खट्टी मीठी यादों पर प्रकाश डालना चाहूँगी। हम सभी पुस्तकों को पढ़ने के लाभ के बारे में जानते हैं, ख़ास तौर पर छात्रों के लिए ,लेकिन जिस प्रकार बच्चों ने अपने इस अनुभव को एक बड़े स्तर पर हमारे और आप सभी के बीच आत्मविश्वास के साथ साझा किया, वह यक़ीनन काबिले तारीफ था ।

पिछले साल 2022 में रीड विद टीचर और (GALE) Global Alliance of Leaders in Education के अंतर्गत हमारे मेंटर साथी श्री मुरारी झा और श्री चंदन झा ने बच्चों में किताबें पढ़ने की रुचि को बढ़ावा देने के लिए रीड विद स्टूडेंट्स (Read with Students) नाम के प्रोग्राम की शुरुआत की थी।यह एक काफ़ी दिलचस्प पहल है, जिसमें कुछ बच्चे मिलकर एक पुस्तक का चयन करते हैं और फिर सभी बच्चे इस पुस्तक को पढ़ते हैं। पढ़ने के बाद ये बच्चे संचालक, अध्यापिका और विद्यालय प्रमुख के साथ पुस्तक पढ़ते समय की अपनी भावनाओं को साझा करते हैं।इसे फ़ेसबुक पर लाइव स्ट्रीम किया जाता है और विभाग के शिक्षक इस कार्यक्रम का हिस्सा बन सकते हैं और अपनी शेयरिंग रख सकते हैं ।

दिसंबर 2022 में मैंने सर्दियों की छुट्टियों से पहले अपने मैंटी विद्यालय के बच्चों को लाइब्रेरी ले जाकर,उन सबकी पसंद से पुस्तक का चुनाव करा दिया।शुरू में बच्चों के मन में कुछ शंकाएं थी और अभिभावक भी बच्चों से स्कूल पाठ्यक्रम पढ़ने की अपेक्षा अधिक रखते हैं लेकिन बाद में सब को समझ आया कि इस सेशन से बच्चो को बहुत लाभ होगा।

फ़ाइनल सेशन से 1 दिन पहले अनौपचारिक तरीक़े से बच्चों के साथ मैंने दोस्ताना अंदाज़ में इस किताब पर चर्चा की। और जिसमे उनकी क्रिटिकल थिंकिंग नज़र आयी।

उदाहरण के लिए बच्चे का यह कहना कि रात में पेड़ों के नीचे बैठना अनुचित भूतों के कारण नहीं बल्कि प्रकाश संश्लेषण क्रिया रात में नहीं होने की वजह से होता है।

एक बच्ची ने हँसते हुए कहा कि मैडम यदि आज भी पेड़ इंसानों की तरह चलें जैसा कि लेखक कह रहे है कि किसी समय होता होगा ,तो ज़रा सोचिए कैसा नज़ारा होगा कि इन्सान कुल्हाड़ी हाथ में लिए भाग रहा है पेड़ के पीछे और पेड़ अपनी जान बचाते हुए उससे दूर भाग रहा है ;यह सुनकर मैं पेरी की क्रिएटिविटी से मंत्रमुग्ध हो गई।

चर्चा के दौरान मेनका ने कहा कि आज कल शहरों में उन्हें और बाक़ी बहुत से बच्चों को अपने दादा दादी या नाना नानी के साथ वक्त बिताने का मौक़ा नहीं मिल पाता है और जिस प्रकार रस्टी की इतनी ख़ूबसूरत यादे हैं अपने दादा जी के साथ इस तरह का अनुभव उन्हें नहीं हो पाता। कितनी ख़ूबसूरती से इस बच्ची ने एक कहानी को आधुनिक युग की एक कड़वी सच्चाई के साथ जोड़ा।

इन सभी उदाहरणों से यह स्पष्ट होता है कि यदि हम बच्चों में किताबें पढ़ने की रुचि को बढ़ावा दें, तो सच में न केवल हम बच्चों को डिजिटली डिटॉक्स करेंगे बल्कि उसका प्रभाव उनकी सोचने की शक्ति और उनके व्यवहार में भी देख सकेंगे। और फिर आख़िर वह दिन आ ही गया यानी कि 27 जनवरी 2023.बच्चे काफ़ी उत्साहित थे और थोड़ी बहुत घबराहट भी थी क्योंकि उन्हें यह मालूम था कि वे सब फ़ेसबुक पर लाइव होने वाले हैं ।

बच्चों ने अपने नाम के ख़ूबसूरत नैम टैग बनाकर लगाए।विद्यालय की सभी टीचर्स ने अपनी टैबलेट्स और मोबाइल दिए और इस तरह सभी के सहयोग के साथ हम सैशन के लिए तैयार ही बैठे थे, कि तभी पावर कट हो गया और हमारे मुख्य संचालक मुरारी सर स्कूल काफ़ी अंदर की तरफ़ होने की वजह से नहीं पहुँच पाए।

इससे हमें निराश तो हुई लेकिन हमने हिम्मत नहीं हारी और उन्हें इस सेशन को अगले दिन रखने के लिए कहा।

अगले दिन हम सब फिर तैयार हो गए और इस बार और भी ज्यादा जोश के साथ।

रस्टी के पालतू जानवरों के बारे में पढ़ कर कुछ बच्चों को अपने घर के पालतू जानवरों से जुड़ी यादें ताज़ा हो गईं।

वे अपने पेट्स (Pet) की तस्वीरें भी ले कर आए थे।जैसे मेनका का पालतू कुत्ता गूगल और उस की पासबुक।

सभी बच्चों ने किताब के अपने पसंदीदा हिस्से को हाव भाव के साथ पढ़ा,जिसमें कुछ तो

कुछ को पढ़कर बच्चों को अपने गाँव की याद आ गई और कुछ बातों को वे अपनी निजी ज़िंदगी से भी जोड़ पाए ।

यही नहीं लेखक की चीज़ों को लेकर जो व्याख्या थी,उसकी भी बच्चों ने सराहना की। प्रज्ञा ने अंदाज़ा लगाया कि लेखक उसके पसंदीदा पाठ में क्या कहना चाह रहे हैं, तो मुरारी सर ने उसके वर्णन की काफ़ी तारीफ़ की। और हम सभी को बताया कि किसी भी पुस्तक को पढ़ने का यही एक सही तरीक़ा होता है ;हमें अंदाज़ा ही लगाना होता है कि लेखक क्या कहना चाह रहे हैं।सबसे बढ़िया बात यह थी कि बच्चे इसको पढ़ कर पूरी तरह से आनंद ले रहे थे ।

हमारी मुख्य अतिथि सुदेश मैडम SOSE मदनपुर खादर की प्रिंसिपल ने बच्चों से एक सवाल किया कि क्या कभी उन्होंने अपने विचारों को लिखा है ? और बच्चों का ध्यान पढ़ने और लिखने के गहरे संबंध की तरफ़ किया।

कुछ बच्चों ने कहा कि पुस्तक पढ़ने के बाद उन्हें ऐसा लगा कि उनके पालतू जानवरों के साथ जो यादें हैं उन्हें ,उन यादों को लिखना चाहिए जिससे जब वे बड़े हो जाएँ तो ये यादें हमेशा के लिए उनके पास संग्रहित हो जायें। स्कूल की HOS अनीता कुमारी मैडम ने बताया कि उन्हें भी किताबें पढ़ने का शौक़ है, और वह यह सुनिश्चित करेंगी कि ज्यादा से ज्यादा पुस्तकें बच्चों को लाइब्रेरी में मिल सके और इस तरह के सेशन बच्चे आगे भी करते रहें।

कुल मिलाकर इस बढ़िया सेशन से हम सभी ने बहुत कुछ सीखा और बच्चों में किताबें पढ़ने का उत्साह पैदा किया।

मैंने इस बात को जिया कि कितनी भी इंफ्रास्ट्रक्चर से जुड़ी हुई दिक्कतें क्यों न हों,यदि हम ठान लेते हैं बच्चों के हित में कुछ करना तो वह हम कर ही सकते है ।

कहानियाँ सच हो जाती है और सच कहानियों में खो जाता है एडवेंचर्स ऑफ़ रस्टी पुस्तक (रस्किन बॉन्ड द्वारा लिखित) की इस खूबसूरत पंक्ति से अलतशा ने सेशन का समापन किया।

पंकज तिवारी
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (कला)
रा. स. शि. उ. माध्यमिक विद्यालय भाटी माइंस

कला समेकित शिक्षा के मायने

हमारा देश भारत विविधताओं का देश है। अनेकता में एकता का देश है। संस्कार और संस्कृतियों का देश है। इसी को ध्यान में रखते हुए नई शिक्षा नीति पर लगातार काम हो रहा है जहाँ स्थानीयता के बल पर विशालता को प्राप्त करने का लक्ष्य। जिसमें कला शिक्षा और कला समेकित शिक्षा पर विशेष बल दिया गया है।

एक समय था कि किसी भी विषय के व्यक्ति में यह आत्मविश्वास होता था कि कला तो मैं ही पढ़ा दूँगा और श्यामपट्ट पर आम, अमरूद, केला तक सिमट गई थी कला शिक्षा। पर नई शिक्षा नीति ने कला के प्रति लोगों का नजरिया ही बदल के रख दिया है। बच्चों को मूर्तता से अमूर्तता की तरफ जाने को प्रेरित किया जाएगा, वह भी कला समेकित शिक्षा के माध्यम से, बच्चों के अपने खुद के प्रयास से।

बच्चों को विषय को समझने-बूझने, महसूस करने का पूरा मौका दिया जाएगा, जिसमें महत्वपूर्ण भूमिका कला समेकित शिक्षा की होगी।

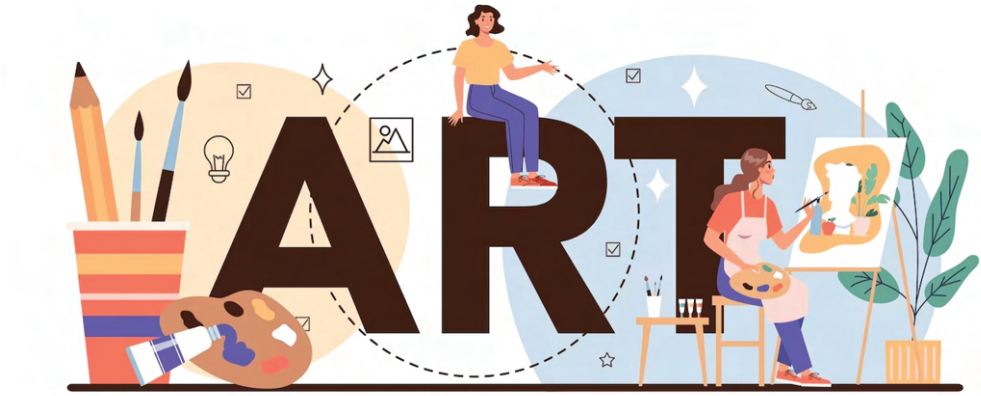

मान लीजिए कि कक्षा में बिना नक्शे के ही वास्कोडिगामा के भारत पहुँचने की बात पढ़ाई जा रही हो या महाद्वीप और महासागरों के बारे में पढ़ाया जा रहा हो, बच्चे कितना समझ सकते हैं? समझ सकते हैं भी या नहीं या उसे बाद में अच्छे से समझा भी सकते हैं, संदेह है।

जबकि कला की सहायता से यानी नक्शे के बल पर बच्चों को समझाने से उन्हें देश, दुनिया को समझने में आसानी होती है और वह हमेशा के लिए उनके मानसिक पटल पर छप जाता है। कभी भी, कहीं भी, आसानी से उसे 'रिकॉल' किया जा सकता है। मतलब साफ है कि रटी हुई विद्या के बल पर बहुत अधिक दूरी नहीं तय की जा सकती है जबकि समझ कर, अनुभव करके सीखी हुई विद्या पर आपका अपना अधिकार होता है।

कला को केंद्र में रखकर बाकी विषयों को आसानी से समझाया जा सकता है। कला के माध्यम से शिक्षक किसी भी विषय के अमूर्तन को धीरे-धीरे मूर्तन की तरफ ले जाते हुए बच्चों के साथ आसानी से जुड़ सकता है। वृत्त, त्रिभुज और वर्ग के माध्यम से चिड़िया बनाते समय बच्चों को गणित आसानी से बिना बोझिल किए पढ़ाया जा सकता है, क्षेत्रफल और परिमाप के बारे में सिखाया जा सकता है और सबसे अच्छी बात यह होती है कि बच्चा अपने पूरे मनोयोग से इस प्रक्रिया में भाग भी लेता है। गौर करने वाली बात है कि वही बच्चा छुटपन में जब दादा-दादी, नाना-नानी से किस्से कहानियाँ सुन रहा होता है, एक ही बार में कंठस्थ कर लेता है और जब जहाँ कहिए, बड़े ही सुंदर तरीके से उसे प्रस्तुत भी कर सकता है।

इन किस्से-कहानियों की प्रस्तुति में अंतर बस यह था कि दादा-दादी इसे अपनी स्थानीय भाषा में और बीच-बीच में गाकर या अभिनय के साथ सुनाते थे फलत: बच्चों का जुड़ाव झट से हो जाता था। नई शिक्षा नीति इसी की ओर बढ़ा हुआ एक कदम है जहाँ शिक्षक और विद्यार्थी दोनों के लिए एकदम खुला फलक है अपने को अभिव्यक्त करने के लिए। शिक्षक नए-नए प्रयोग करते हुए नवाचार के माध्यम से बच्चों के बीच पहुँच कर बच्चों की दुनिया को प्रकाशवान बना सकता है जबकि बच्चे रटे बिना, समझते हुए अपने आपको वैश्विक स्तर पर नई पहचान के साथ प्रस्तुत कर सकते हैं।

कला कल्पनाओं को पंख देने का कार्य करती है, हद को अनहदता में बदल सकती है। उदाहरण के लिए, मेरे विद्यालय में मैंने हिंदी दिवस के अवसर पर प्रार्थना सभा में बच्चों से

स्वरचित कहानी कविता लिखने की अपील की। अगले दिन बच्चों का उत्साह देखने लायक था। थोड़े से संशोधन के साथ ही उनकी कविताएँ परिपक्व हो गईं थी।

मनुष्य का नैसर्गिक स्वभाव है कि यदि उसे कल्पना लोक में विचरने के साथ कार्य करने की आजादी हो तो वह असंभव से असंभव कार्य को भी संभव कर सकता है।

कला बच्चों को सीमाओं में नहीं बाँधती है बल्कि असीमित करने की माँग करती है। बच्चे रंगों, रेखाओं के साथ फलक पर अमूर्त की यात्रा में निकल जाते हैं जबकि कलाकृति की संपन्नता के बाद जब आप कलाकृति के बाबत उनसे बात करेंगे तो वे उसका इतना विवेचनात्मक विश्लेषण करेंगे कि दाँतों तले अँगुली दबाने पर मजबूर हो जाना पड़े।

रंगों के प्रभाव, रेखाओं के टेढ़े-मेढ़ेपन में इतनी कहानियाँ हमारे सामने रख देंगे कि हम वहाँ तक सोच ही नहीं सकते। ऐसे-ऐसे पहलू खुलकर सामने आएँगे कि उस बच्चे की योग्यता पर आपको नाज़ होगा।

बच्चों के समझने की सीमा असीमित है, बस हमें कला के माध्यम से बच्चा बनकर उनकी ही भाषा में उनके विचारों में पंख लगाना होगा। शिक्षक और विद्यार्थी के बीच कल्पना को जगह देनी होगी, तब अमूर्तन के मूर्तन में बदलने को आसानी से देखा जा सकेगा।

कला समेकित शिक्षा के माध्यम से यह जरूर सम्भव हो जाएगा और आने वाला समय इस परिवर्तन को महसूस भी करेगा। बच्चों के पढ़ने और समझने की प्रक्रिया में बदलाव निश्चित रूप से दिखेगा।

सुनील कुमार महतो
प्रवक्ता रसायन शास्त्र
राणा प्रताप सर्वोदय विद्यालय राजेंद्र नगर

EMC की सफलता

मेरे दो प्रिय छात्र, पारस और गुरपाल, की सफलता का सफर देखकर मुझे गर्व होता है कि मैंने उनके जीवन में एक महत्वपूर्ण योगदान दिया। यह दोनो छात्र शक्ति नगर नंबर 1 के कक्षा बारहवी सत्र: 2022-23 के विद्यार्थी थे। EMC ने इन छात्रों को व्यावसायिक दिशा में उनका भविष्य तय करने में सहायता प्रदान की है, और मैं इस पर गर्वित हूँ कि हमने उन्हें एक नई दिशा में आगे बढ़ने के लिए सही मार्गदर्शन दिया।

गुरपाल और पारस की साझा सफलता का सफर सच में प्रेरणास्पद है। गुरपाल एक कंप्यूटर भाषा कोडर है, जिसने अपने कौशल का प्रयोग करके 'Lend My skill'

जैसे महत्वपूर्ण उत्पाद को बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जबकि पारस ने 'Lend my skill' जैसे व्यवसाय के बारे में सोचा तथा गुरपाल के साथ मिलकर उसको अंजाम दिया। EMC ने मूलभूत उद्यमशील क्षमताएँ विकसित करने में सहायता की।

गुरपाल पारस

भले ही 'Lend My skill' एक सफल परियोजना नहीं बन पाया, लेकिन इससे गुरपाल और पारस ने बहुत कुछ सीखा तथा उसे अपने जीवन में ढाला। यह कहानी हमे यह सिखाती है कि सफलता केवल एक लोकप्रिय व्यक्ति या अमीर बनना नहीं होता, सफलता वह होती है जिसमें व्यक्ति अपनी क्षमताओं को पहचान सके तथा उसका बेहतर प्रयोग कर सके और जीवन में कुछ हासिल करे।

इस सफर से उन्होंने यह सीखा है कि कैसे अपने उत्पाद और खुद को अन्य लोगों के सामने प्रस्तुत किया जाता है, और कैसे विभिन्न लोगों के साथ संवाद किया जाता है। वर्तमान में, गुरपाल एक डेवलपर है, उसकी क्षमताओं पर विश्वास करते हुए मैंने उसे एक रेफरल प्रदान किया, जिसने उसके सफल भविष्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, मुझे गर्व है कि गुरपाल आज 'Giga Growth Ventures' का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है, जबकि पारस दिल्ली विश्व. विद्यालय में इलेक्ट्रॉनिक्स ऑनर्स की पढ़ाई कर रहा है।

उन दोनों ने अपने व्यक्तित्व को सदैव बेहतर बनाने के लिए काम किया है तथा आगे भी कर रहे हैं और इसके लिए उनके पास दिल्ली सरकार तथा मेरी मदद हमेशा रहेगी। यह कदम, न केवल कक्षा की सीमाओं के भीतर शिक्षा देने की एक शिक्षक जिम्मेदारी को दिखाता, बल्कि छात्रों के पेशेवर जीवन में उसकी अहम भूमिका को भी दर्शाता है।

इस सफलता का श्रेय EMC, को जाता है, जिसने दो सामान्य छात्रों को उनकी असली क्षमता और अवसर की पहचान करना सिखाया है, और उन्हें दूसरों से अलग बनाने में सहायता की है। उन्होंने EMC बिजनेस ब्लास्टर के दो चरणों को भी पार किया है।

गुरपाल के पास कोडिंग का ज्ञान है, और उन्होंने कई MNC कंपनियों में इंटर्नशिप की है, जबकि पारस के पास ब्लॉकचेन प्रौद्योगिकी और मूल रोबोटिक्स की जानकारी है, तथा वह साइंस एग्जीबिशन के विजेता भी रहे चुके हैं। वह वर्तमान में वह कई नई तकनीकों जैसे ब्लॉक. चौन, स्मार्ट कॉन्ट्रैक्ट आदि के अवसरों का की खोज कर रहे हैं।

दोनों ही छात्र काफी मन लगा कर अपने कार्य को करते है। इस वर्ष भी EMC के लक्ष्य में आगे बढ़ाते हुए हम आशा करते है कि इससे और बच्चों के माइंडसेट में बदलाव होगा तथा वे चौथी औद्योगिक क्रांति के लिए मजबूती से तैयार हो सकेंगे।

विद्यालय में संगीत शिक्षा क्यों

डॉ प्रियलक्ष्मी

लेक्चरर संगीत,
स० बा० वि० शहीद हेमू कालानी, लाजपत नगर

अभिव्यक्ति के विभिन्न माध्यमों ने कलाओं को जन्म दिया ।
कलाएँ जितनी रोचक हैं, उतनी ही आकर्षक भी। विचार कीजिए यदि कलाएँ ना होती तो ये दुनिया कैसी होती।
क्या दुनिया में सृजन होता? अगर नहीं तो विकास कैसे होता?

तो क्या विकास के केन्द्र मे कला है? 3 विचार करें ।

ध्यान दें ..हृदय गति , Pulse Rate , श्वास - प्रश्वास की गति , अन्य शारीरिक गतियाँ, दिन - रात मौसम -चक्र सूर्य , चन्द्र , ग्रहों , की गतियों में एक निश्चित लय है ब्रह्माण्ड मे हर वस्तु की अपनी एक ध्वनि (स्वर) है।

सृष्टि के नियम व अवयवों - लय और स्वर पर आधारित एक कला है, "संगीत" ।

कक्षाध्यापिका के रूप में मेरा यह अनुभव रहा कि अदाकमिक विषयों के अध्यापन से विद्यार्थी तनाव में रहते हैं , कक्षा में अनुपस्थित होते हैं जबकि संगीत सीखने के लिए छुट्टी के बाद भी रुकने को लालायित रहते हैं। मुझे आज भी वह दृश्य याद है जब जिन कक्षाओं में संगीत विषय नहीं दिया गया था वे मुझसे संगीत पढ़ाने की ज़िद करते ।

जहाँ एक ओर ध्वनियों की शक्ति विशाल इमारतें गिरा सकती हैं। वहीं दूसरी ओर संगीत का उपयोग चिकित्सा मे किया जाता है। यह कला भी है और विज्ञान भी।

परन्तु संगीत के वृहद गुणों और प्रभावों के बावजूद सामान्यतया यह कला केवल मनोरंजन तथा रोज़गार के विकल्प के तौर पर ही ज्ञात है। परन्तु मेरे विचार से इसे जीवन शैली के रूप मे अपनाया जाना चाहिए।

संगीत लम्बे समय से एक विषय के रूप में विद्यालयों में पढ़ाया जा रहा है। एक संगीत शिक्षिका के तौर पर एक बार मुझसे पूछा गया कि विषय के रूप में संगीत पढ़ाने से कहीं संगीत जैसा मनोरंजक विषय भी छात्रों के लिए अरुचिकर तो नहीं हो जाएगा ? तब मेरा उत्तर था 'मुझे लगता है अगर हमारी शिक्षा व्यवस्था में अन्य विषयों की भाँति संगीत शिक्षण की भी व्यवस्था कक्षा 1 से 12 वीं तक होती तो यह सवाल न होता'।

Assembly के बाद , staff room के बाहर मेरा इंतजार करते, मैं भी जैसे ही free period मिलता बच्चों को सिखाने चल देती। इस कारण कई बार मेरे साथी भी नाखुश होकर कहते, ये और इसके बच्चे! पर संगीत कक्षा में बच्चों की जिज्ञासा और खुशी हमेशा मुझे प्रेरित करती रही। कुछ बच्चों ने कहा था मैडम हम VI-A से VI-F में आना चाहते है क्योंकि हमें संगीत पसंद है।

मुझे याद आती है कक्षा 7 वीं स जो मुझे ग्रुप में अलग अलग गीत सुनाकर अनुरोध करते कि हमे कार्यक्रम में रख लीजिए। इसी कक्षा के एक बच्चे को मैंने कंठ स्वर अलग होने के कारण समूह में नहीं रखा था लेकिन संगीत के प्रति उसके लगाव, निष्ठा और अनुरोध के कारण बाद में उसे भी समूह में शामिल करना पड़ा।

समय बर्बाद होगा क्योंकि इसमें रोजगार के अच्छे अवसर नही है। आप किसी भी गीत के credits देख कर संगीत में रोजगार का अंदाजा लगा सकते हैं ।

(इस विषय को हेय दृष्टि से देखते हुए कुछ सज्जनों ने नचनिया गवनिया इत्यादि संज्ञा देकर हतोत्साहित भी किया)

इस विषय का एक और आयाम यह रहा कि बच्चे मुझसे बहुत जल्दी जुड़ जाते थे और कई बार वे बातें भी साझा करते जो किसी और से नहीं बताते। ऐसा मैंने अन्य संगीत शिक्षकों से भी सुना है।

बच्चों ने साझा किया कि संगीत श्रम का नहीं बल्कि ताज़गी का एहसास कराता है। तनाव से मुक्त करता है । संगीत तो अन्य विषयों की पढ़ाई के थकान को मिटा सकता है और नई उर्जा भी प्रदान कर सकता है, तो क्या यह अन्य विषयों के लिए बाधक है ?

कई बार कुछ शिक्षकों ने संगीत के अभ्यास में उनकी कक्षा के छात्रों के चयन के लिए मना किया ।
शायद यह सोचकर कि संगीत जैसे विषय में समय देने से अन्य विषयों के अध्यापन का समय घट जाएगा अथवा यह विषय छात्रों को इतना आकर्षित करेगा कि अन्य विषयों से उनका मन हट जाएगा।

कुछ लोगों ने तर्क दिया संगीत विषय से

फलतः कुछ विद्यार्थी अच्छा कंठ होने के बावजूद संगीत विषय को आसान विषय समझकर या अन्य विषयों जैसा सम्मान न मिलता देखकर संगीत विषय चुनने में हीनता का अनुभव भी करते हैं।

इन सभी मतों /भ्राँतियों के बावजूद विद्यालयों में संगीत पढ़ाया जाता है और NEP 2020 में तो संगीत को Co-curricular नहीं बल्कि मुख्य विषय के रूप में बताया गया है। तो आखिर क्या वजह है कि संगीत की शिक्षा को इतना महत्व दिया जा रहा है।

इसे समझने के सबसे पहले शिक्षा के उद्देश्य पर ध्यान देना होगा। विचार कीजिए क्या विद्यालयी शिक्षा का उद्देश्य केवल सूचना अर्जित करना है।
या फिर एक सर्वांगीण विकसित व्यक्तित्व का निर्माण करना है?

वर्तमान समय में सूचनाओं की अपेक्षा मानवीय सामाजिक गुणों का विकास कठिन है।

जिस प्रकार शारीरिक पोषण के लिए संतुलित आहार के रुप में अलग-अलग षोषक तत्व एक निश्चित प्रमाण में आवश्यक होते हैं, किसी एक का भी अभाव किसी विकृति के रूप में प्रकट होता है;

उसी प्रकार मानसिक पोषण के लिए भी विभिन्न घटकों की पूर्ति आवश्यक है। संगीत उन घटकों में से एक है ।

शारीरिक स्वास्थ्य के लिए जिस प्रकार श्रम के बाद विश्राम की आवश्यकता पड़ती है, उसी प्रकार मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी मानसिक कार्य के बाद मानसिक विश्राम की आवश्यकता होती है। जितना महत्व व्यायाम का है उतना ही नींद का भी है।

कल्पना कीजिए आप लगातार कई दिनों तक कठोर परिश्रम करें परन्तु नींद बिलकुल ना लें तो शरीर की क्या स्थिति होगी । इसी प्रकार मानसिक श्रम के बाद मानसिक विश्राम की आवश्यकता है। इसके लिए मनोरंजन, विनोद, ध्यान, कला आदि कई विकल्प हैं । परन्तु संगीत एक ऐसा विकल्प है जो कला भी है और विज्ञान भी। साथ ही यह ऐसी शक्ति रखता है जो स्वाभाविक ही सभी को आकर्षित करता है।

लॉजिकल थिंकिंग एनालिसिस के लिए उत्तरदायी लेफ्ट ब्रेन थकान पैदा करता है । इमोशनल इंटेलिजेंस, इनटयूशन इत्यादि के लिए उत्तरदाई राइट ब्रेन को एक्टिवेट करके लेफ्ट ब्रेन को बैलेंस किया जा सकता है । राइट ब्रेन को

एक्टिवेट करने हेतु संगीत बहुत ही मनोरंजक विकल्प है ।

संगीत शिक्षण से, मानसिक विकास , भावनात्मक अभिव्यक्ति, रचनात्मकता और कल्पना ,सांस्कृतिक समझ और सराहना ,साझा काम और सहयोग, अनुशासन और संघर्षशीलता जैसे गुणों का विकास संभव है ।

शिक्षा निदेशालय, दिल्ली, छात्रों के सर्वांगीण विकास हेतु सजग है तथा अन्य विषयों के साथ संगीत शिक्षण को भी प्रोत्साहित कर बहुल गुणों के विकास का अवसर प्रदान कर रहा है।

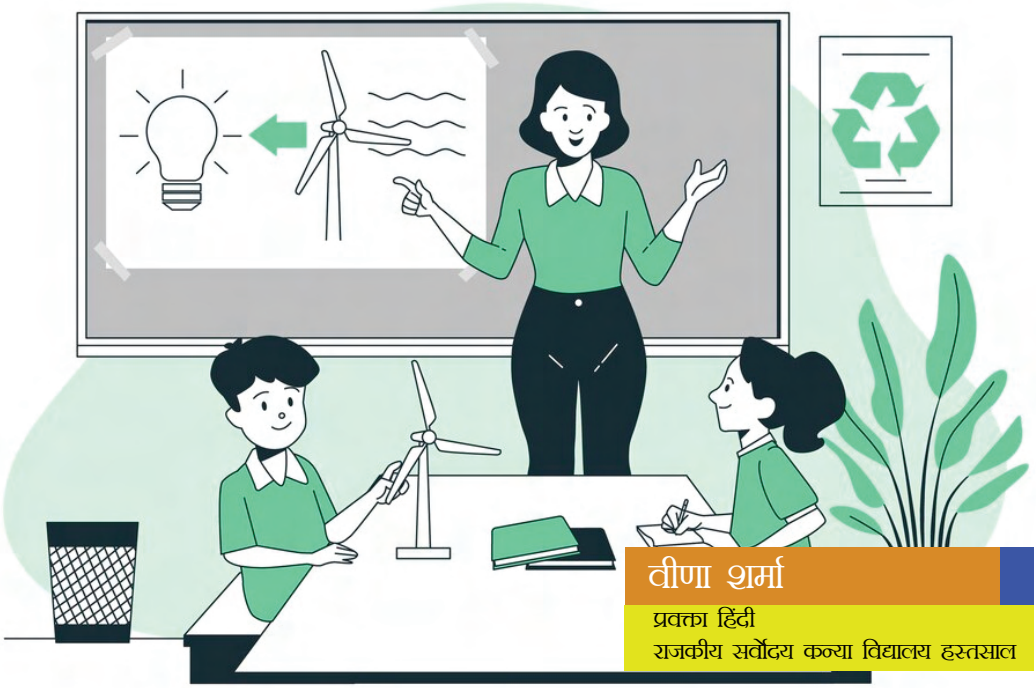

वीणा शर्मा
प्रवक्ता हिंदी
राजकीय सर्वोदय कन्या विद्यालय हस्तसाल

कड़ी से जुड़ती कड़ी

यह उन दिनों की बात है जब मैंने 2007 में शिक्षा निदेशालय में टी जी टी के पद पर निलौठी वेस्ट बी में कार्य भार सँभाला तो 105 बच्चों से गुलज़ार कक्षा 7 की कक्षा अध्यापिका बनी। उन्हें पढ़ाने और संवाद करने में मजा भी आने लगा।

किसी को समस्या आती तो उसका समाधान करती और कोई छुट्टी करता तो उसका कारण अवश्य पूछती थी जिससे कक्षा में उपस्थिति अच्छी रहती। उनमें से एक बच्चा कन्हैया अक्सर छुट्टी करता था। मैं उसे विद्यालय आने को प्रेरित करती। इसी तरह से वर्ष बदलते रहे और मेरी कक्षा के बच्चे नौवीं में आ गए। कन्हैया का विद्यालय आना बंद हो गया।

आशीष जो कि मॉनिटर और कन्हैया का मित्र था, उससे पता चला कि अब कन्हैया विद्यालय नहीं आ पाएगा क्योंकि पढ़ाई का खर्चा करने के लिए उसके पास पैसे नही थे ।

पता चला कि उसकी माता जी बचपन में ही चल बसी थी और पिता घर छोड़ चुके थे। दूसरी माँ और उनकी दो बेटियों की जिम्मेदारी अब उन नन्हे कंधो पर थी।

माँ कभी फैक्ट्री में काम करती तो कभी खाली रहती थी। पिता का केस लड़ने के लिए पैसे चाहिए थे। वह सुबह सुबह निकल जाता और शाम तक माली का काम करके आ जाता। लेकिन तंगी बढ़ती जा रही थी इसलिए स्कूल आना बंद कर दिया था।

यह सुनकर मैंने आत्म विश्लेषण करना शुरू किया कि आखिर किस वजह से कन्हैया ने अपने मन की बात मुझसे नही की। खैर, मैंने आशीष के हाथ संदेश भेज कर कन्हैया को स्कूल आने को कहा कि

फीस और बाकी खर्चे मैं उठा लूंगी। वह आया। मैंने उसके सिर पर प्यार से हाथ फेर कर उसे पढ़ाई जारी रखने को कहा और उसकी मदद करने का आश्वासन दिया। उसने स्कूल आना शुरू कर दिया। मैंने और मेरे साथियों ने उससे पौधे खरीदने शुरू कर दिए। इससे अब वह केवल शनिवार को छुट्टी करता और उस दिन का काम पूरा करने में उसके सहपाठी मदद करते थे। इस तरह स्कूली शिक्षा सुचारू रूप से पूरी हुई। इस बीच उससे मेरा संपर्क बना रहा।

ओपन विश्वविद्यालय से बी.ए करके उसे एक परिवार जिनके पास वह माली का काम करता था , वहाँ सी.ए के पास काम मिल गया। दिन रात के कड़े परिश्रम के बाद उसने रिटर्न्फ़ाइल, एकाउंट्स की बारीकियाँ सीखी। जी एस टी का काम भी सीखा। धीरे धीरे अपना व्यवसाय शुरू किया और अपनी मेहनत के बल पर। आज वह अपने पैरों पर खड़ा है और उसका परिवार आराम से अपना जीवन बिता रहा है। एक दिन वह मुझे धन्यवाद देने मेरे पास आया। मैंने उसे आशीष देते हुए बस इतना ही कहा– तुम अपने पैरों पर खड़े हो गए हो। अब तुम दूसरों की मदद करना ताकि यह सिलसिला चलता रहे।

ऐसे ही एक लड़की संध्या मेरे स्कूल में आठवीं कक्षा की छात्रा थी। कुछ नया सीखने की ललक उसमें हमेशा से थी। उसके परिवार में माँ और एक छोटा भाई है, पिता का निधन बहुत पहले हो चुका था। माँ एक प्राइवेट स्कूल में सहायिका की नौकरी करती थी।

संध्या इंग्लिश माध्यम से पढ़ाई कर रही थी पर पैसो की तंगी के चलते ट्यूशन के पैसे नहीं होते थे। उसे जब भी कोई मुश्किल होती तो वह अपने विषय की अध्यापिकाओं से मदद लिया करती थी। सभी उसे प्यार से पढ़ाते। संयोग से उसी वर्ष शिक्षा निदेशालय ने अंग्रेजी सीखने की विशेष कक्षाओं का प्रबंध किया जिसमें उसने भी एडमिशन लिया और अपनी लगन और मेहनत से और शिक्षकों की मदद से अंग्रेजी बोलने-लिखने में सक्षम हो गई।

दसवीं में उसने टॉप किया। इसके बाद की पढ़ाई उसने उसी स्कूल से की जहाँ उसकी माँ काम करती थी, लेकिन सिफ़ारिश से नहीं बल्कि इंटरव्यू पास करके और विज्ञान विषय लेकर। उसकी फीस का इंतज़ाम उसकी टीचर्स ने मिलकर किया। संध्या मेरे संपर्क में लगातार बनी रही। उसे जब भी किसी चीज की या किसी मार्गदर्शन की जरूरत आती तो वह बेझिझक फ़ोन करती। इस तरह उसने बारहवीं पास करके गार्गी कॉलेज में बी एस सी बॉटनी में दाखिला लिया।

लेकिन कुछ समय बाद कोरोना (Covid -19) आ गया । यह कहर संध्या की माता जी पर भी टूटा और उनकी नौकरी चली गई। दो वक्त का खाना जुटाना मुश्किल हो गया। उसकी माँ बीमार रहने लगी। सरकारी फ्री राशन ने भूख का इंतजाम तो कर दिया पर रोज़ की जरूरतों को पूरा करने की चुनौती अभी भी सामने मुँह बाये खड़ी थी ।

तब एक दिन मेरे बहुत पूछने पर संध्या ने सकुचाते हुई फ़ोन पर अपनी परेशानी बताई। मैंने आर्थिक सहायता की पर वह अपर्याप्त थी। तब मैंने और मेरी दो साथियों ने मिलकर उसकी सहायता करनी शुरू की। यह सिलसिला भी कुछ महीने चलता रहा।

पर बार-बार की यह सहायता संध्या के आत्मसम्मान पर चोट दे रही थी। इसलिए मैंने कन्हैया से बात करके संध्या के लिए ट्यूशन की व्यवस्था कर दी। अब वह और उसका छोटा भाई जो दसवीं कक्षा में पढ़ता है, दिन में अपनी-अप. नी ऑनलाइन पढ़ाई करते हैं और शाम को ट्यूशन पढ़ाते हैं। इस तरह से अधिक तो नहीं पर सम्मान के साथ जीने का साधन तो मिल गया है। संध्या ने भी जब धन्यवाद देना चाहा तो मैंने भी दूसरों की मदद करते रहने को कहा।

ये थे मेरे जीवन मे आये दो बच्चे कन्हैया और संध्या जिनके जीवन को जरा-सा सहारा मिलते ही उनका जीवन सँवर गया। आप सबके जीवन में भी ऐसे अनेक उदाहरण होंगे जहाँ थोड़ी-सी मदद ने किसी बच्चे के जीवन को नई दिशा दी होगी। इसी तरह से एक कड़ी से दूसरी कड़ी जुड़ती जाती है और जीवन सुंदर, सफल और सार्थक हो जाता है।

अमित कुमार शर्मा
टी जी टी अंग्रेज़ी,
RDJK, रा० सह शिक्षा उ० मा० वि०, भजनपुरा

के–यान : शिक्षण, अधिगम और मनोरंजन

दिल्ली के एक सरकारी विद्यालय में अंग्रेजी विषय की फैकल्टी मीटिंग चल रही थी । अंग्रेजी के अध्यापक संजय जी बहुत चिंतित दिखायी दे रहे थे । पूछने पर उन्होंने बताया कि 9 वीं कक्षा के छात्र अंग्रेजी में बहुत कमजोर हैं साथ ही अंग्रेजी का पीरियड लंच ब्रेक के बाद होता है और उस पीरियड में अधिकांश बच्चे क्लास बंक करते हैं ऐसा लगता है कि उनका अंग्रेजी पढ़ने का मन ही नहीं करता।

बहुत से तरीकों से कक्षा को रोचक बनाने का प्रयास भी किया है परंतु सफलता नहीं मिल रही है। संजय जी ने छात्रों से भी कई बार इस संदर्भ में बात की परंतु कोई लाभ नहीं मिल सका छात्र खुल कर अपनी बात नहीं बताते थे। एक बात जो संजय जी को समझ आ रही थी वह यह थी कि अंग्रेजी उन छात्रों के लिए अधिक विर-परिचित भाषा नहीं है। अब क्योंकि उन्हें अंग्रेजी मे अधिक व्यावहारिक अभ्यास नहीं मिल पाता इसलिए न तो उनकी उसमें रुचि होती है और न ही वे उसमें महारत हासिल कर पाते हैं।

शायद यही कारण है कि वे अंग्रेजी की कक्षा में भी अनुपस्थित रहते हैं।

एक अन्य अध्यापक प्रदीप जी ने उन्हें के-यान का प्रयोग करने की सलाह दी। के-यान दिल्ली के सभी सरकारी विद्यालयों मे मौजूद एक ऐसा उपकरण है जो प्रोजेक्टर, स्पीकर और कम्प्यूटर तीनों काम करता है। इसकी एक बड़ी खूबी यह भी है कि यह किसी भी सपाट प्रोजेक्टेड सतह को आई-रिस नामक सॉफ्टवेयर का प्रयोग कर एक बोर्ड मे बदल देता है जिस पर आप स्टाइलस पैन की सहायता से लेखन का कार्य भी बहुत सुगमता से कर सकते हैं।

इन सब खूबियों के साथ साथ इसमें सभी कक्षाओं का सारा कोर्स-कंटेन्ट भी लोडेड है । उदाहरण के तौर पर अंग्रेजी पाठ्यपुस्तक की सारी कहानियाँ और ग्रामर कार्टून फिल्म के रूप में के- यान में हैं। इससे न केवल शिक्षण अधिगम कार्य रोचक हो जाता है अपितु यह विभिन्न प्रकार के छात्रों की अधिगम आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए असेसमेंट को भी बहुत आसान बना देता है जिससे समय और मेहनत दोनों की बहुत बचत होती है ।

संजय जी ने के- यान का प्रयोग करने का मन बना लिया और अपनी कक्षा में घोषणा की कि कल हम अपनी अंग्रेजी की पाठ्य पुस्तक की एक कहानी फिल्म के माध्यम से देखेंगे। बस फिर क्या था अगले दिन अधिकतर बच्चे कक्षा मे उपस्थित थे। वादे के मुताबिक संजय जी सभी बच्चों को के-यान वाली लैब मे लेकर गए और उन्होंने उसमे पहले से ही लोडेड कोर्स कंटेन्ट में से एक कहानी की फिल्म छात्रों के सामने चला दी और साथ ही साथ उसे समझाते भी रहे जिससे न केवल छात्रों को मजा आया बल्कि उन्हें कहानी और उसके पात्र भी याद हो गए। साफ दिख रहा था कि बच्चे आज की क्लास से बहुत खुश थे ।

अगले दिन कक्षा में छात्रों की उपस्थिति पिछले दिन से भी अधिक थी और छात्र फिर से के-यान क्लास मे जाने के लिए कह रहे थे। शिक्षा में तकनीकी का प्रयोग अपने आप में किसी चमत्कार से कम नहीं है इसीलिए नई शिक्षा नीति 2020 में भी तकनीकी को शिक्षा में विशेष स्थान दिया गया है ।

निश्चित तौर पर यह के-यान का जादू और अध्यापक का बच्चों के हित में किये गए प्रयास का परिणाम था ।

नोट: कहानी मे प्रयुक्त अध्यापकों के नाम काल्पनिक हैं।

नेतल राजे पुष्करणा
प्रवक्ता हिन्दी सर्वोदय कन्या विद्यालय
पुष्पविहार, सेक्टर 1 एम बी रोड

प्रोजेक्ट वॉयस: दिल्ली के बच्चों की आवाज़

शिक्षा निदेशालय (डीओई), दिल्ली सरकार ने एक कार्यक्रम शुरू किया है जिसका नाम है, 'प्रोजेक्ट वॉइस', जिसका उद्देश्य सरकारी स्कूल के छात्रों की भाषा में प्रवाह और सार्वजनिक रूप से बोलने के कौशल को विकसित करना है।

वास्तव में 'प्रोजेक्ट वॉइस' अपने विचारों को साझा करने के लिए एक प्रभावी मंच है। यह मंच छात्रों को निडर होकर अपनी राय व्यक्त करने का कौशल विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करने का एक प्रयास है।

पहले पहल जब हमनें 'प्रोजेक्ट वॉइस' के अंतर्गत वाद-विवाद, आशुभाषण, कविता पाठ, कहानी पाठ आदि गतिविधियों का आयोजन करवाया तब बच्चों में एक स्वाभाविक झिझक और संकोच देखने को मिला।

सप्ताह दर सप्ताह बच्चों का यह संकोच आत्मविश्वास में और झिझक जुझारूपन में बदलने लगा। कुछ महीनों में बच्चों के आत्मविश्वास में आश्चर्यजनक रूप से वृद्धि हुई।

इसके साथ ही बच्चे आपस में भी एक दूसरे को प्रेरित करने लगे। एक बार एक बच्ची मंच पर कविता पढते-पढते भूल गई और रोने लगी। तब बाकी बच्चों ने तालियाँ बजाकर उसका मनोबल बढ़ाया। सबने एक स्वर में उस बच्ची के लिए के नारे लगाये।

वास्तव में यह एक अभिभूत कर देने वाला क्षण था। 'प्रोजेक्ट वॉइस' ने बच्चों में एक स्वस्थ प्रतिस्पर्धा के साथ-साथ आपसी सहयोग भी विकसित करने में योगदान दिया है।

शिक्षा विभाग द्वारा शुरू किए गए 'प्रोजेक्ट वॉइस' में छात्रों का शब्दावली विकास, आत्मविश्वास में वृद्धि, बेहतर और महत्वपूर्ण सोच में कुशलता, बेहतर संतुलन, भाषण कला में प्रवीणता, सार्वजनिक रूप से बोलने के कौशल और टीमवर्क कौशल में वृद्धि हुई है। इन सभी बिन्दुओं पर छात्रों को शिक्षित किया जाता है, जिसके बाद छात्र निडर होकर और बेबाकी से अपनी बात कह पा रहे हैं।

सार्वजनिक तौर पर छात्रों को इस प्रोजेक्ट के माध्यम से काफी लाभ हुआ है। इससे छात्रों का आत्मविश्वास बढ़ा है और अंग्रेजी, हिंदी और संस्कृत में अपने विचारों को व्यक्त करने की क्षमता का निर्माण हुआ है।

यह एक ऐसा मंच है जहाँ अपने विचारों और मतों को व्यक्त किया जा सकता है। छात्र अपने संकोच से बाहर आ रहे है।

'प्रोजेक्ट वॉयस' ने स्कूलों में एक सतत प्रशिक्षण और जुड़ाव की प्रक्रिया तैयार की है जिससे सार्थक बहस करने वाले और उच्च गुणवत्ता वाली भाषा की प्रवीणता रखने वाले छात्रों को उनका मंच मिला है। छात्रों ने इस मंच का भरपूर लाभ भी लिया है।

इस प्रोजेक्ट के द्वारा बच्चों में वक्तृत्व कौशल का काफी विकास हुआ है। उनमें विचारों को समझने का कौशल, पढ़ने की आदत, शोध-कार्य करना, विचारों की अभिव्यक्ति और सहभागिता करने की क्षमता, भाषा पर मजबूत पकड़ आदि का भी विकास हुआ है।

इस कार्यक्रम से छात्रों में कविता के भावों को पहचानना, सार्वजनिक भावभिव्यक्ति, नाद सौंदर्य तथा काव्य से जुड़ाव भी हुआ है।

सरकारी स्कूल के छात्रों को धाराप्रवाह अंग्रेजी में गम्भीर मुद्दों पर वाद-विवाद करते देखना अपने आप में एक आश्चर्यजनक तथा गौरवान्वित कर देने वाला क्षण होता है।

साथ ही वाद विवाद से छात्र असहमतियों का सम्मान करना सीख रहें है। मंच पर तथ्यपूर्ण,तीखे, धारदार तर्कों से एक दूसरे को पराजित करने को आतुर बच्चे मंच से उतरते ही एक दूसरे को उनके विषय की पकड़ के लिए बधाई देते देखे गए है। स्कूल स्तर के बच्चों में इस तरह की समझदारी विकसित होना, असहमत होने पर भी सम्मान बनाए रखना,अपने आप में प्रोजेक्ट की एक बड़ी उपलब्धि है।

विशेष प्रार्थना सभा में बच्चों को उत्साह के साथ गति, यति, लय, ताल के साथ संस्कृत के स्त्रोतों का पाठ करते सुनना अत्यंत रोमांचक होता है। 'प्रोजेक्ट वॉयस' के कारण हम इन क्षणों के साक्षी हो रहे हैं।

कवितापाठ की प्रतियोगिता ने छात्रों में संगीतात्मकता के प्रति भी अत्यधिक रुझान बढ़ाया है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि दिल्ली शिक्षा को इस प्रोजेक्ट की महती आवश्यकता है।

कुल मिलाकर देखा जाए तो शिक्षा विभाग के इस कार्यक्रम ने छात्रों में संप्रेषण क्षमता के साथ-साथ भाषा कौशल बढ़ाने का सार्थक प्रयास किया है।

इसके परिणाम निकट भविष्य में भाषा कौशल पर बच्चों की दक्षता के माध्यम से देखे जा सकते हैं।

लोकेश शर्मा
टीजीटी प्राकृतिक विज्ञान
GBSSS महिपालपुर

छात्रों की सहभागिता से आसान हुई परीक्षा की तैयारी

आजकल लगभग हर अध्यापक का यही प्रयास रहता है कि कक्षा में पढ़ाई को सुगम एवं रुचिकर बनाया जाए। बच्चों को शिक्षण कार्य में बाँध कर रखना या उनको पूरे कालांश के दौरान सम्मिलित कर पाना एक महत्वपूर्ण और आवश्यक कार्य है। इसके लिए हमें कुछ ऐसे तौर तरीक़ों को अपने शिक्षण कार्य में शामिल करना होगा जिससे बच्चे कक्षा के दौरान पूर्ण रूप से सम्मिलित रहें और ज्ञानार्जन कर सकें।

हम अपने आस पास अपने साथी अध्यापकों को इसके लिए अनेक विधियों का प्रयोग करते हुए देखते हैं। लेकिन कई बार पूरा प्रयास करने के बाद भी हमें मन मुताबिक़ नतीजे नहीं मिल पाते। कई बार बच्चों की अनुपस्थिति या कक्षा में होते हुए भी उनकी मानसिक अनुपस्थिति इसमें बाधा बनती है। आज के समय में ख़ासकर कोरोना के बाद बच्चों की एकाग्रता में कमी आयी है।

बच्चों को शिक्षा के प्रति ध्यान केंद्रित करने में आने वाली कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए हर अध्यापक का दायित्व बनता है कि वह कुछ ऐसी विधियों का प्रयोग करे जिसमें पठन एवं पाठन का कार्य सुगम व सुरुचिपूर्ण हो जाए, एवं सभी विद्यार्थी उसमें मन लगाकर अपने आप को सम्मिलित करें।

इसी को ध्यान में रखते हुए मैंने रिवीजन करवाने का एक तरीका अपनाया जिसमें मैंने कक्षा के सभी बच्चों को छोटे-छोटे ग्रुप में बाँट कर प्रत्येक ग्रुप को पाठ्यक्रम का एक -एक पाठ तैयार करने को कहा ।

इस तरह से पूरा पाठ्यक्रम सात या आठ भागों में बँट गया।

प्रत्येक दिन एक ग्रुप अपना दिया हुआ पाठ तैयार करके आता है तथा समस्त कक्षा के सम्मुख अपने तैयार किये हुए पाठ को प्रस्तुत करता है।

उनकी इस क्रिया के दौरान अध्यापक उनके सहायक के रूप में होता है। जहाँ भी बच्चे विस्तारपूर्वक वर्णन करने में अटकते है, अध्यापक उनका सहयोग करता है।

इसको देखकर अगला ग्रुप, जिसको आने वाले कल में अपना दिया हुआ पाठ करवाना है अच्छी तरह से अपनी तैयारी करता है।

देखते ही देखते मात्र आठ दिनों में मध्यावधि का पूरा पाठ्यक्रम बच्चों के द्वारा पूरा कर लिया गया जिसमें प्रत्येक बच्चे को पूरा पाठ्यक्रम दोहराने का अवसर मिला। जब अंतिम ग्रुप की बारी आयी तब वर्णन करने का जो स्तर था वह भी बहुत ऊँचा उठ चुका था।

अब अगले चक्र में प्रत्येक ग्रुप को बदल कर दो -दो पाठ दिए गए। अब समस्त विद्यार्थी इस कार्यक्रम से पूर्व परिचित थे अतः त्रुटियाँ कम होने लगी और अगले सप्ताह में फिर से एक बार समस्त पाठ्यक्रम का रिवीज़न पूर्ण हुआ।

इस प्रकार बच्चों में स्वतः ही पढ़ने एवं पढ़ाने की रुचि जागृत हुई और अध्ययन का कार्य इतना सुरुचिपूर्ण हुआ कि सभी बच्चे इससे लाभान्वित हुए।

उनके आत्मविश्वास में भी अत्यधिक वृद्धि हुई। अगर यही प्रक्रिया हम सभी कक्षाओं में क्रियान्वित करते हैं तो इसके लाभ एवं नतीजे हमारी अपेक्षा से कहीं अधिक प्रभावी होंगे।

बच्चों को नई नई विधियों से पढ़ाना, उनके पढ़ने में सहायक होने के साथ साथ उनके आत्मविश्वास और योग्यता को भी बढ़ाता है। पठन पाठन में उन्हें पूर्ण रूप से सम्मिलित करना इस गतिविधि का मुख्य उद्देश्य था।

शिक्षण में विभिन्न गतिविधियों को सम्मिलित कर प्रयोग करने से अध्यापन एवं शिक्षण का कार्य सुगम, सुरुचिपूर्ण एवं नतीजा देने वाला बन जाता है और विद्यार्थी भी ऐसी कक्षा में अपना संपूर्ण योगदान देते हैं।

#DelhiGovtSchools Our stories on Social Media

Hon'ble CM @ArvindKejriwal Inaugurated new School Building at Dr. B.R. Ambedkar School of Specialized Excellence Dariyapur Kalan, Delhi

Hon. DE @gupta_iitdelhi along with Ms. Reena Gupta, Advisor to Delhi Govt. graced the occasion, on the occasion of closing ceremony of 9 days immersive program, "Environmental Leadership Bootcamp" at S Co Ed Vidyalaya, Jungpura, Bhogal.

The search brought us at @ayudh_india Amritapuri. Under the leadership of our visionary Director @gupta_iitdelhi , 100 officials & teachers are attending Holistic Leadership in Education Workshop.

#DelhiGovtSchools Our stories on Social Media

Delhi-CENTA TPO Felicitation Ceremony was organised at Veer Savarkar Sarvodaya Kanya Vidyalaya!

ADE Dr. Rita Sharma visited SV No 1, R. K. Puram during the #InductionSession

Honble MLA Mr Chandrashekhar and Spl Secretary Education Mr Pankaj Rai from Himachal Pradesh.

Mr Amarjeet, Director Higher Education & Secretary General of National School Games federation, from Himachal Pradesh, visited KGSBV Chirag Enclave and ASOSE kalkaji

हिमांशु गुप्ता की ओर से शिक्षा निदेशालय के लिए
और लक्ष्मी स्टोर, बी-1606, शास्त्री नगर, दिल्ली-52 पर
मुद्रित और शब्दार्थ , सूचना एवं प्रचार निदेशालय
दिल्ली सरकार, पुराना सचिवालय , दिल्ली से प्रकाशित
संपादक - डॉ बी. पी. पांडे

RNI Reg No. 23771/71
Magazine Post Registration Number DL(DS)-44/MP/2022-23-24

दिल्ली शिक्षा के पुराने अंक आप नि:शुल्क ऑनलाइन भी पढ़ सकते हैं।
दिल्ली शिक्षा को ऑनलाइन पढ़ने के लिए इस लिंक पर जाएँ
https://fliphtml5-com/bookcase/jlddc"